

तुलसीदास कृत रामायण का

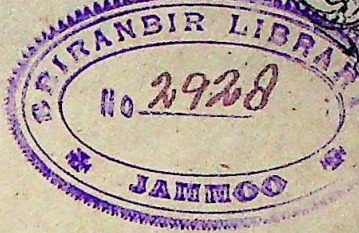
इतिहास

امین کا احاطہ

2928

2928

3368 जिसमें



रामायण सम्बन्धी दोहा चौपाइयों के प्रसङ्ग में वाल्मीकि, भारद्वाज, कुम्भज,
परशुराम, दुर्वास, ध्रुव, दक्ष, चित्रकेतु, कनक कशिपु, सिद्धि, दधीचि,
गालव, नहुष, आदि राजाओं व ऋषीश्वरों का वृत्तान्त

वर्णित है

श्रीमन्महाराजाधिराज गुणि गण मराडली मराडन

श्री उद्दित नारायण सिंह जी वीरेश काशी नरेश की

आज्ञानुसार

कविकुल शिरोमणि श्री खुनाथ दास कविने बनाया

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के

उपकारार्थ

लखनऊ

Rajeev

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छपा गया

अक्टूबर सन् १८७८ ई.

6424

294.5

R 04 T

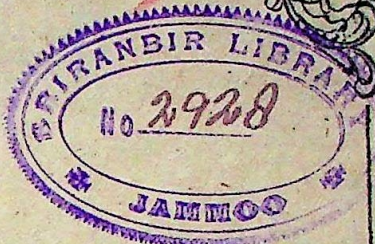
Raghunath Das

तुलसीदास कृत रामायण का

इतिहास

امین کا احاطہ

2928



2928 3368 जिसमें

रामायण सम्बन्धी दोहा चौपाइयों के प्रसङ्ग में वाल्मीकि, नारद, कुम्भज,
परशुराम, दुर्वास, ध्रुव, दक्ष, चित्रकेतु, कनक कशिपु, सिद्धि, दधीचि,
गालव, नहुष, आदि राजाओं व ऋषीश्वरों का वृत्तान्त

वर्णित है

श्रीमन्महाराजाधिराज गुणि गण मराडली मराडन

श्री उद्दित नारायण सिंह जी वीरेश काशी नरेश की

ज्ञानानुसार

कविकुल शिरोमणि श्री खुनाथ दास कविने बनाया

महात्मा हरि भक्तों और अन्य विद्यानुरागियों के

उपकारार्थ

लखनऊ

Rajeev

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छापा गया

अक्टूबर सन् १८७८ ई.

6484.

price B. 1/1/ =

अथ शंकावली

श्रीजानकी बल्लभो विजयते । एगोसाई जी की रामायण विचारते सर्व शंका रहित है जाते पूर्व परल गाए ते इसी ग्रंथ में समाधान बाहुल्य ते मिलत है परंतु इस ग्रंथ का प्रचार बहुत है याते बहुत लोग शंका करत हैं ताते कछु लिखत हैं शंका भाषा वह करव में सोई प्रतिज्ञा ते विरुद्ध कांड के आदि संस्कृत कवि काहि लिखे । उत्तर । देव बानी अति मंगल रूप जानकै वा भाषा के खदल कून में संस्कृत हू चाहिये १ सं. निज इष्टदेव त्यागि प्रथम गणेश बंद ना किए उ. गणेश का प्रथम पूजन सर्व सम्मत वा प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ २ सं. गोसाईं जू अनन्य हि मुज रखवर उपासक नारायण जू को उर में बास ए काहे को उ. दोऊ का अमेद जानि प्रमाण प्रगट भये श्रीकंठा ३ सं. माया जीव ब्रह्म जगदीश ये सब अनादि हैं विधिने कैसे बनाये उ. उपजाने में तात्पर्य नहीं है गुण औगुण का प्रकरण है वा प्रार्थना ते विधिने उपजाये प्रमाण यजय सुर नायक इत्यादि प्रार्थना और तुमहिं लागि घरि हों नरवेष्टा ४ सं. पूर्व अनेक बंदना करि आये अब बंदो प्रथम मही सुर चरणा यह कैसे वने उ. चारों वार्ण में प्रथम कही आदि ब्रह्मण ५ सं. बंदो प्रथम भरत के चरण कैसे वने उ. नीनों भादून में प्रथम भरत वा श्रीराम भक्तन में सुरख ६ सं. नाम बंदना में चाप भंग में कहि दंड कवन पावन कहा यामें कांड क्रम भंग दोष होत है उ. विवाहादि शेष वालकांड चरित्र चाप भंग अंतरगत है प्र० दूत ही धनु भयो विवाह इत्यादि औ समग्र अयोध्याकांड आधा आरख्य दंडक वन पावनसे गतार्थ है प्र. सुनि गण मिलन विशेष बन इत्यादि वा सप्तकांड में तात्पर्य नाही किंतु वक्ते प्रतापादि बर्णन में है ७ सं. गोसाईं जी कहं कविन होहु कहत हैं कही कवि तुलसी यामें काहेतु उ. कविन होहु निज दीनता से कवि शंभु प्रसाद सुमति हिय डलसी इत्यादि ८ सं. अघ तो प्रसिद्ध है बिन अघ तबी सती यह कैसे उ. इहां अघ शब्द दुःख वाचक है सती त्याग में शिव जू के कछु दुःख

वर्णन भयो दुःखी भयं विद्योग प्रभु तोरे यह भक्ति विरह में कहे पत्नी आव ते नहीं
 सं. प्रजा सहित रघुवंश मणि निज धाम गये यह प्रश्न के उत्तर नदिये सो कहा उ.
 उपासकन के निज अवध बिहार सम्मत है ताते बक्ता मौन रहे वा उत्तर में गुप्त उत्तर दि
 यो गये जहां शीतल अमरार्द्र बाग से फिर गृह आगमन लिखे १० सं. जो प्रभु में न
 हों पूछो सो भी कहना सो शिवजू कहा कहे उ. औरों एक कहों निज चोरी इत्यादि
 ११ सं. स्ती मोह तो आराय कांड में भयो फूल बाटिका में गिरिजा नाम से पूजन
 कैसे करे उ. देवता अनादि हैं इनमें सब नाम सदा प्रसिद्ध हैं प्र० गुरु अनादि
 जिय जानि १२ शं. निश दिन नहिं अवलोकहिं कोका उभय घरी में रात दिन कै
 से बने उ. कोक निश ही में भोग करने लगे दिन नाहीं देखत यह अचरज वाको
 पुर्ष का दुस्त्री यह निज पत्नी संबंध के मर्यादान रही १३ शं. काम की चढ़ाई तो सं
 कर के विजय हेत है विश्व विजय गाये सो कहा हेत उ. विश्व विजयी काम के संहार
 से शंकर के अति बड़ाई में तात्पर्य है १४ शं. मनुसतरूपा के बरदान समय में
 युगल प्रगटे बरदान राघव दियो कि सोरी जी न बोली सो क्या हेत उ. दोनों का अ
 भेद है प्र० देवत भिन्न न भिन्न १५ शं. भानुप्रताप धर्मात्मा ज्ञानी सो आप ते रा
 क्षस भयो यामें क्या हेत । जीव के प्रारब्ध कर्म मुख्य हैं प्र० तुलसीजस भव तव्यता
 इत्यादि १६ शं. रावण के बरदान में बानर मनुज दुई और मरो एक मनुज राघव हा
 थ से दूसर बर का क्या हेत उ. रावण बध में रामजू प्र० आपन बध मानव कर बा
 ची हंस्यो राक्षस बध में ये दोऊ भिन्न भिन्न कारण हैं १७ शं. जन्म एक दुइ ए
 तीन कल्प की कथा पहिले शिवजू कहे चतुर्थ कल्प के प्रसंग में मन प्रकरणा
 ते आकाश बानी ते कहे कश्यप अदिति महातप कीन्हा पुनः नारद बचन सत्य
 सब करिहौ यह पूर्व कल्प के कथा इहां कहां ते आई उ. भेद सै इहां । व्यवस्था
 प्र० कल्प भेद हरि चरित सुहाये । भक्ति अनेक मुनीसन गाये इत्यादि १८ शं. श्रीरामा
 दि चारों भाइन्ह के नाम करण में क्रम अंग है उ. इहां पाठ क्रम ते अर्थ क्रम
 बली है वा राम तापनी मांड कोप निषद में क्रम विपर्य यह बालक्षमणा
 के विशेष गुण कहिने ये याते भरत के लिखे नहीं सत्रघुन की आड़ से
 लिखे १९ शं. माता को पै लै अलौकिक विवेक दिए रहे अब सो भूली
 ए विश्वरूप दिखाये यामें क्या हेत उ. वात्सल्य की अधिकता सै माता भू
 ली प्रभु विश्वरूप दिखाइ कै पूर्व विवेक दृढ़ कराइन्ह २० शं. विष्णामित्र
 पहिले ही जानते रहे तव ऋषि निज नाथ चीन्हे यह कैसे बने उ. राह में ऋषि

बाल विनोद देखि भूले ताड़का बधसे पुनः ईश्वर जाने प्र. गीतावली प्रगट च
रित सुहाये इत्यादि २१ सं. ऋषि दोऊ भाइन्ह को यज्ञ रक्षा हेतु ल्याये राजा
विना मिथिला को क्यों ले गये उ. अब मुनि ही पिता हैं प्र. राजा बचन तुम मु
नि पिता आन नहि कोई २२ शं. मिथलेश जू प्रथमहीं विश्वामित्र से राम प्रता
प जाने रहे तब सभा में अनादर बचन सबके साथ क्यों कहे उ. राम रूप मोह
नी ते जनक जू राघव का ऐश्वर्य भूले यहां वात्सल्य रस प्रधान है २३ शं. सीय
स्वयंवर देखिय जाई यह नहीं बनत जाते सिया जू स्वयंवर नहीं बरा उ. स्व
यंवर डड़ विध है प्रन स्वयंवर द्रोपदी आदिका स्वतः स्वयंवर द्रोपदी दमयंती
आदि २४ शं. जनक वाम दिशि सोह सुनैना और स्मृति में अरु लोक में द
क्षिण दिशि पाइयतु है सो क्या हेतु उ. वाम कही शिव शिव कही कल्याण दि
शि अर्थ ते कल्याण दिशि आवत है वा जनक की वाम पत्नी सुनैना सोह
दिशि दक्षिण दिशि अथवा जनक है वाम दिशा जेहि के पेसी सुनैना २५ शं.
जब ते राम व्याहि घर आये तब ते अयोध्या में सब आनंद बसे तो आगे क्या
आनंद नहीं है उ. अल्हादनी शक्ति सीता जू तेहि ते आनंद पूर्ण भयो यह भाव है २६

इति संक्षेप ते बालकांड शंकावली

अयोध्याकांड शंकावली शं. पूर्व बालकांड में ही श्रीगुरु पद रज ते विवेक ने
त्र विमल करे पुन इहां निज मन मुकर सुधार काहे लिखे उ. भरत महिमा वर्णन
अति अगैम जानि पुनः मन निर्मल कीन्ह प्र. भरत परम महिमा सुनि रानी
जानहिं राम न सकहिं बखानी । अयोध्या कांड में मुख्य भरत चरित्र प्र. भरत
चरित करि नेम इत्यादि वामहाराज दशरथ आदि सबका मनोरथ भंग इस का
ंड में विचार रजते सो कमल दूर कीन्ह २७ शं. दशरथ जू राम जू को विश्वा-
मित्र साथ भेजे तब तनु त्यागन करे बन यात्रा में कीन्ह सो क्या हेतु उ. विश्वा-
मित्र के साथ गये तहां बशिष्ठ जू बचन ते संदेह नाश और मुनि सहायक
और ऋषि तनु के नृपनिज प्राण धारण करि बचे प्र. तुम मुनि पिता आन
नहिं कोई पुनः सुत उर लाइ मृतक जनु भेटे बन में सब बिपरीत तेहि ते न
त्याग २८ शं. श्रीजानकी जू बन यात्रा समय में सेवा करे को कहा और
ग्रंथकार सेवा न लिखे सो क्या हेतु पिता बचन में तात्पर्य प्राणपति के सा
थ जाने को है वा प्रत्यक्ष सेवा भी लिखे बट काया वेदका सुहाई इ
त्यादि २९ शं. राम जू के केई बरदान तो तापस वेष विशेष उदा

सी हैं तो धनुषबाण धारनो रथ चढ़ि वो मृगया आदि कैसे बनेउ. कैकेई
 का वरदान व्याज और है अवतारि धरि स्वतंत्र लीला करि वो मुख्य राम ज
 नम जग मंगल हेतु वा मुनि व्रत औ स्वधर्म दूनों निवाहे ३ शं. प्रयागवा
 सी भरत की बड़ाई करत हैं राम गुण ग्राम मुनि वो कैसे उ. निज बड़ाई
 सुन मुख्य उपासक स्वामी के गुण समुक्त हैं वावेनी के फूल में हरिकथा
 से राम गुण ग्राम सुनत चले ३१ शं. भरद्वाज के शिष्य पचासक आये और
 सब राम प्रेमी मुनि चारैक बटु संग दिये में का हेतु उ. सीता गमादि चारि बटु
 भी वा चार सब ते अधिक सुकृती चार वा चार बेद यथार्थभारग ज्ञाता ३३
 शं. श्रीराघव को शिव पूजन अयोध्या औ लंका में लिये और मैं नाहीं सो क्या
 हेतु उ. श्रीराघव जूके कुल देव रंगजू हैं और संकट में आराध्य शंकरजू या
 में अनेक प्रमाण एही प्रथम में बालउत्तर में संकट है नहीं आराण्यादि में
 सीता विरह सो राम जू बिकल ३३ शं. श्रीराघव के बन यात्रा में पग में मल
 का न लगाये भरत के कहे सो क्या हेतु उ. राम गवन पर्यंत है औ बसंत ऋतु
 भरत के यात्रा ग्रीष्म में और विरह संताप ते ३४ शं. भरद्वाज भरत के पहु
 नाई में ऐश्वर्य दिखाये सो क्या हेतु उ. भरत के बैराग्य की परीक्षा अर्थ यथा
 रथ भई प्र. मुनि आयसु खेलबार ३५ शं. भरद्वाज से भरत की भेट गाये
 महा मुनि बालमीक सो नाहीं सो क्या हेतु उ. भरत जी विरही हैं राम दरशन
 में अतित्वरहै भरद्वाज पहुनाई वत कदाचित् बिघ्न करे ताते कवि भेट न
 गाये ३६ निषाद राज तो यमुना तीरही सैं फिर भरत यात्रा में देखावत हैं
 किये पय सरित समीप खबर परण कुटी है तो एकहां तें जान्यो उ. निषा
 द फिरो तो बीचही ते ये वर्ष भर के भीतर कैक बार गयो वा सेवकन द्वारा
 प्रति दिन की खबर लगाये रह्यो राम जू के भरनागमन को पै लै बिचार
 पुनः निश्चय है खल्लन के बल हृदय स्वभारे लखे यामें क्या हेत उ. लक्ष्म
 ण राम प्रेमांध हैं राघव का कलेश नाहीं सह सकतु प्र. मातु पिता नहिं
 जानउं काह ३८ ॥ इति अयोध्याकांड शंकावली ॥ अथ आरण्य शंका
 लक्ष्मण जू प्रथम निषाद को ज्ञान बैराग्य भक्ति उपदेश कीन्ह फिर राम जू
 से फिर षट प्रश्न किये को क्या हेतु उ. सब बात के ज्ञाताभी बड़ेन को प्रश्न
 करते हैं वा आगे खपति ललित नर लीला करेंगे सब बात पूछ राखें ताते मो
 ह न होय ३९ शं. सर्पनरत्न तो परम सुंदरी बन के गई लक्ष्मण जू रिपु

भगनी कैसे जानी उ. अगस्त के बचन से वा सूपनखा के बचन तें तीन लोक
 में खोजेउं नहीं मिला तातें अवलगि कुआरी रही इत्यादि बचन ४० राम जू
 सूपनखा ते लक्ष्मण को कुंवारे कहे एतो विवाह हैं उ. हास्यरस और नि
 वाह राजनीति आदि में मूढ का दोष नहीं कुमार अवस्था ४२ शं. काम लो
 भादि कोई रीति सों जीव सन्मुख जाय ईश्वर त्याग नहीं करत तो सूपनखा
 कैसे कर त्यागी विरूप करि उ. सीता विरोधनी अति वृद्धा शत्रु भगनी रही ४३
 शं. मारीच तो कपट मृग रहा ताको चर्म राम जू कैसे ल्याये उ. प्रभु सत्य
 संकल्प हैं तातें मृगै तन रहा प्र. राम कीन्ह चाहें सो होई ४३ शं. मृगछा
 ला लाये किनाहीं यह कुछ कवि न लिखे सो क्या हेतु उ. जेहि प्रिया के
 अर्थ चर्म ल्याये सो चोरी गई तातें कवि चर्म ग्रंथ में प्रगट न कहे अवसर
 रपाड़ के कहे प्र. तापस रुचिर मृदल मृगछाला ४४ शं. रावण तो मन में
 अनुमान कीन्ह गीधराज सुनत धायो यह कैसे बने उ. सुनत पद में रावण
 कछु कदु बचन कहे यह जानव । ४५ शं. राम जू गीधराज से कहे कि
 सीताहरण पिता सों न कहिनाजो मैं राम तो कुल सहित रावण कहे गो यामें
 क्या हेतु उ. सीता हरण सों पिता के स्वर्गों में अति दुःख होइ गो रावण
 तो मेरे पर कहे गो तातें सीता प्राप्ति शत्रु बध आदि सें अति सुख होइ गो
 ४६ शं. सेवरी को राम जू न बधा भक्ति कहे सो भागवत आदि ग्रंथ से
 विरुद्ध है उ. यह ग्रंथ नाना पुराणा गम निगम है ॥ ४७ ॥ इति आरण्यशं.
 अथ किष्किंधा शंका ॥ हनूमान विप्ररूप धरि क्षत्री को राम को माथ ना
 यो सो क्या हेतु उ. राम तेज न सहि सके वानेत्र सुख द्वारा कपट लखि पौर
 गो तातें माथ नीचे कीन्ह ४ शं. लक्ष्मण ते दूना प्रिय हनूमान को काहे
 कहे उ. लोक रीति सों कि हमारे माणाह ते तुम अधिक हो वा कपि के
 बल दुख में सहायक है लषण सुख दुख में वा लषण राम के सेवक हैं
 ए दोनों के सेवक वालषण द्वारा प्रिया वियोग इन द्वारा प्राप्ति शं.
 महावीर ने ए प्रभु कैसे पहिचाने उ. दक्षारथ के जाये इत्यादि बचन तें
 ये बड़े पंडित हैं ५ शं. राघव अरु सुग्रीव अनेक देव छाड़ कै पावके
 सारवी क्यों दिये उ. मित्रता बचन द्वारा वा गिंद्रिय को देवता अग्नि वा
 शुद्धता औ सपथ अरु साक्षी यों अग्नि सुख प्र. तो कृशानु सब
 कै गति जाना । ५१ शं. राघव एकरूप दोऊ भाइन्ह के कहे निज में भ्रम

औ माला मेली ए सब में क्या हेतु उ. नरनाट्य में सब बनत है ५३ शं. रा
 मजू प्रथम वाली बध के एक बाण से प्रतिज्ञा कीन्ह फिर दूसर बाण चढ़ाये
 सो क्या हेतु उ. बानर राज वाली नेहि के सहायक निवारणार्थ बाण की अ
 मोघता राम संकल्प के अधीन ५३ शं. रामजू सरतान के बाल के हृदय मर्म
 स्थान में मात्स्य जलदी न मत्स्यो सो क्या हेतु उ. राम रूप दर्शन संभाषण अं
 गद से पवन आदि हेतु राम इच्छा ५४ शं. जेहि शायक ते में वाली माग
 नेहि बाण ते में काहु मूढ़ को हतौ यामें सत्य प्रतिज्ञा और शरणागत
 पालत्व कैसे बने उ. वोही दिन सुग्रीव आय आय मिले ५५ शं. और
 दिशा में छोटे बानर सात समुद्र पार गये दक्षिण में सब सुभट तहां निज
 निज बल कहे अंगद आइ वे में संशय कहा सो क्या हेतु उ. अति बली रा
 वण को भय वा गुप्त मुद्रिका देन आदि हनुमान को जानत हैं इति किंकिधा
 शंकावली ॥ अथ सुदरशंका ॥ महावीर अशोक बाटिका में सीता रह
 व संपाती से सुना रहा महल में खोजे काहे गये उ. अशोक बाटिका इन्ह
 की नहीं जानी याते विभीषण कहें में ५७ महावीर के लंका जात पुर्व बा
 धक न मिले तीन स्त्री ए मिली सो क्या हेतु उ. भव सागर के पार जात सु मु
 दू के तीनो लोक के स्त्री बाधक स्वर्ग की सुरसा पाताल की बासनी सिंह
 का मृत्यु लोक के लंकिनी ५८ गयो दशानन मंदिर माहीं दुइ भ्राता के एक
 एक शिरया के दशको भये उ. ब्रह्म विचार कीन्ह विद्या ५९ हमारे सुख
 चार दश विद्या के अर्थ दशानन कीन्ह यह भाव सुगरी नाटक में वा परमार्थ
 रामायण में रावण मोह रूप है दश इंद्रिय आनन है ५९ शं. राम लक्ष्म
 ण तो राक्षसी माया ते बन गये और माया ते अस रचि नहि जाइ यह कैसे
 उ. सुंदरी में राम नाम है नाम दूनी ब्रह्म ते बड़ा है ६० शं. सुग्रीव को बाल बध
 करि राज दीन्ह और विभीषण को रावण जीवत तिलक सारे यामें क्या हेतु उ.
 सीता जी के धैर्य अर्थ वा जीवत शव सम चौदह प्राणी वा निशाचर हीन करौं
 महीं या प्रतिज्ञा ते ६१ शं. समुद्र राम दूत के ती मैनाक द्वारा सेवा कीन्ह और राम
 के तीन दिन वीति न आयोन सेवा यामें क्या हेतु उ. दूत का पराक्रम देखा और राम
 के नरनाट्य बचन ते भूम भयो वा साठ हजार उत्तर तटवासी आभीरों के बध में
 तात्पर्य है ६२ इति सुंदर कांड शंकावली ॥ अथ लंका कांड शंका ॥ समुद्र
 के यह पार शंभु थापना में क्या हेतु उत्तर सर्व तीर्थ में समुद्र औ अष्ट वैकुण्ठ

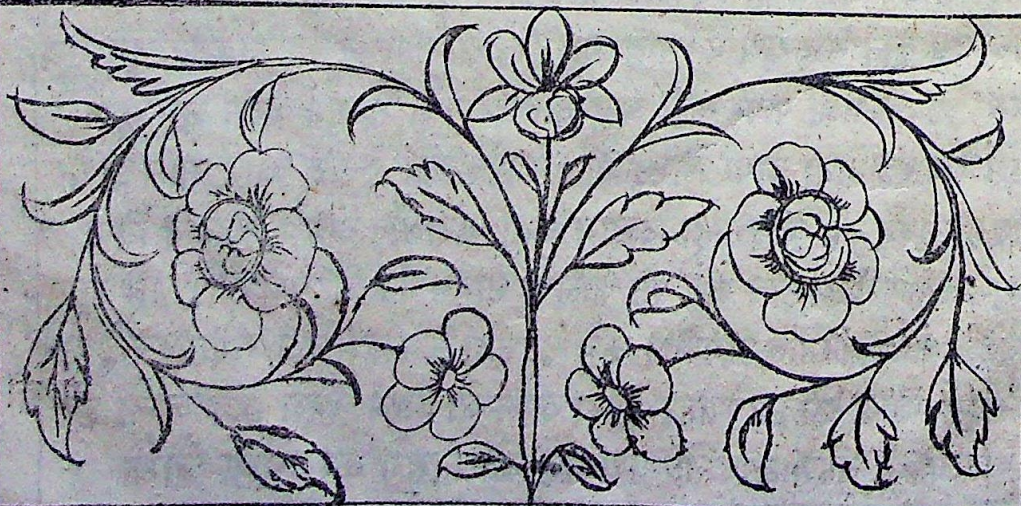
अंतर्गत द्रविड़ देश जान कै वा रावण शंभु भक्त है शंभु के एहि पार राख जाते उ
 स्का पक्ष करै ६३ शं. पहले सेतु के हेतु तीन कहे जलधि १ नलनील २ राघव ३ से
 तु बांधे पर श्रीरघुबीर प्रताप ते पाषाण तरे सो क्या हेतु उ. और उपाय साधारण
 मुख्य हेतु सर्व शक्ति युत ईश्वर वा मारुत लरत सुभट विजय मालिक राजा ६४
 शं. सेतु बांध कै फेर तीन मार्ग कहे सो क्या हेतु उ. भव सागर पार के तीन मार्ग
 कर्म ज्ञान उपासना ३ जलचर कर्म मार्ग आकाश निरालं वज्रा. सेतु सम उपासना
 शं. सुबेल पर रामजू के सयन औ सिथलता कहे और रावण के नृत्यादि औ राज
 औ सो क्या हेतु उ. राघव विरही बह राज श्रीयुत वा रामजू देवी संपति युत शान्त
 आसुरी संपति वालो वह चंचल वा राम के रावण कुछ माल नहीं जग महं सखानि
 सा वा छिपाइ कै श्रीराम कहे सो चंद्र वर्णन औ छत्र भंग से अस्पष्ट ६६ शं.
 फिरै राम सीता में हारी सीता हारने वारे कौन उ. राम निंदा सुनि रोष ते साहस
 वा राम प्रताप समुद्र के ६७ शं. लक्ष्मणा के प्रथम शक्ति लगी तब बड़ो दुख बढ़ो
 उपाय दूसरी शक्ति में कछु नाहीं या में हेतु उ. प्रथम में नरनाथ्य दूसरे में ईश्वर
 ता बालपन की भूमि औ दीनता यथा संख्य ६८ शं. महाबीर राम कार्य के अर्थ
 औ पधी लेने चले तहां अनेक दुःख पाये मरते बचे सो क्या हेतु उ. स्वामी के आगे
 चल आषि अभिमान ते चले ६९ शं. माया सर में मकरी कहाँ रही उ. सर तो
 पूर्व को रह्यो स्वना विशेष माया ते एही हेतु मूल में वर पद दीन्ह प्र. सर मंदर
 वर दाग बनावा ७० शं. राघव लषणा को सहोदर कहे पुनः निज जननी के एक
 कुमार कहे यह कैसे बने उ. सहोदर प्रताप ते प्र. प्रभु प्रलाप सुनि कान वाचरु
 ते वा पिता संबंध ते वा कौशिल्या उदर में लषणा भी प्रथम रहे बल देवकी नाई
 प्र. शेष उपनिषद् एक कुमार एक पद से मुख्य ७१ शं. विभीषणा राम शरणा
 भये पर कुंभकराण के पांय जाइ परे सो क्या हेतु उ. भेद करि मिलावै सो अर्थ
 वा निज वृत्तांत कहि शुद्धता अर्थ ७२ शं. अंगद हनुमान सुभट शिरोमणि सो
 मेघनाद के कोप के मारे वा को धावन औ मी न तब फिर चले औ कुंभकरा
 ण रावण १ मुष्टिका से भूमि में गिरे यामें क्या हेतु उत्तर एके और को विजय कहै
 तो राणा शोभा नहीं होय वा मेघनाद के उत्कर्ष ते लषणा के उत्कर्ष में तात्पर्य ७३
 शं. रावण कुंभकराण के वाण द्वारा लंका में पठायो औ मेघनाद के हनुमान
 लंका द्वार पर धर आये सो क्या हेतु उ. लषणा के मेघनाद सम शत कोटि योधा
 न उठाए और मेघनाद को एकै दास हनुमान उठाये लंका द्वार पर धरे यह

उत्कर्ष ७४ शं. विज्ञानी विभीषणा समर में बिकल होइ कै रथकी इच्छा क
 री सो क्या हेतु उ. नरनाथ देख भूले रहे राम जू परमारथ उपदेश तें पुनः
 सावधान कीन्ह जैसे अर्जुन प्रति गीता ७५ शं. शिवजू आरायेंते ८७ हजार
 वर्ष समाधि में रहे हमहुं उमा रत्ना चरित्र देखे यह कैसे बने उ. ईश्वर अनेक रूप
 तें समर्थ ७६ शं. प्रतिज्ञा तो प्रति बिंदु कै ताको जरिबो कहै तो पतिव्रत कैसे ब
 ने उ. सत्य सीता कै प्रगटै में तात्पर्य प्रति बिंदु को विंदु में लय ७७ शं. विभीषणा
 पुष्पक कुंवर को न दियो राघव को दियो सो क्या उ. वर्ष १४ में थोरिक दिन वाकी रह भरत
 देख वे की अति जलदी जाती पुनः राघव कुंवर को दिये ॥ इति लका शकाव.
 अथ उत्तर शकावली ॥ पहले महावीर के वचन सुनि भरत बोले नहीं दूसरे
 वचन में बोले सो क्या उ. दूसरे में विशेष रिपु रण जीत सीता अनुज सहित
 प्रभु आवत पहले में यह नहीं ७८ शं. जिन्ह कपिन्ह को निज देह गेह आदि
 सो अधिक प्रिय कहै ते बिदा किये जे सामान्य प्रिय कहै ते राम जू समीप राखे
 यह कैसे उ. नीति विचार तें वा प्रीत मुख्य चाहिये दूर समीप व्योहार गौरा ८
 शं. दुई सुत सीता जाये पुनः दुई दुई सुत सब भ्रातन्ह करे और राम जी को
 नाम न लीन्ह सो क्या उ. भरतादि के पुत्र अयोध्या में भये तेहि तें नाते पिता
 नाम तें रख्यात सीता के पुत्र वाल्मीकि आश्रम में नैहर के पुत्र भये तें कन्या ना
 म से फलानी के बेटा भयो है सुनि के सीता जू में कन्या भाव गीतावली में प्र
 सिद्ध ८१ शं. अंगद अनेक आति दीनता भाषे कृपाल राघव पास में न राखे
 सो क्या उ. राज गादी इनकी परंपरा भ्रष्ट न होवे ८२ शं. शंकर जू भुशुंडी
 से कथा प्रत्यक्ष रूप तें न सुने मराल तनु से सुने सो क्या हेतु उ. सब आता मर
 ल देखे वा गुप्त रूप तें कथा स्वाद अधिक वा शंकर भुशुंडी आचार्य हैं प्रगट
 में संकोच वा सत असत का निर्णय मराल सो ८३ शं. गरुड़ जू भुशुंडी प्रति
 कहै महा प्रलय में भी तुमारे नास नाही सो कैसे उ. लोमस बरदान तें प्र
 काम रूप इच्छा मरण इत्यादि कबहुं काल न व्यापिहि तोही यह श्रीराघव ब
 रदान वा उपासना मत में भगवत भागवतादि सब नित्य ८४ शं. राम उदर में
 भुशुंडी के अनेक कल्प बीते बाहर दुई घरी सो क्या उ. राम प्रेरित यामें सब
 बनत है ८५ शं. भुशुंडी के मोह से भरतादि अनेक रूप देखे राघव एकै
 रूप हैं तो भ्रातादि मिल कैसे बनेंगे उ. कौतुक के भरतादि में नित्य विचार नाही
 ८६ शं. लोमस के प्रकरण में बिना अज्ञान हैन होते नाही और शिवजू

भुञ्जुं की प्रमाण हैतही कहे सो क्या उ. भक्ति रहित ज्ञान को अनादर भ
 क्ति सहित को आदर दूनों पक्ष में यथा संख्य प्र० निज प्रभु मय देखेयज
 गत इत्यादि ८७ शं. ज्ञान सिद्ध भये पर ग्रंथि खोलव लिखे बाकी कौन ग्रंथि
 रही उ. अभ्यास की दृढ़ निवृत्ति में तात्पर्य ८८ प्र० औरों एक गुप्त मत इत्या
 दि ८८ शं. पाछे कौन गुप्त मत कहै जाते यहां औरों गुप्त मत कहत हैं औ
 र हाथ जोरे में का भाव अरु शंकर भक्ति साधन और राम भक्ति साध्य के
 क वार ग्रंथि कार लिख आये पुनः इहां काहे लिखे उ. अद्वैत मत में ज्ञान
 बिना मोक्ष नाहीं यह सिद्धांत वाको गौण करि भक्ति से मोक्ष और भक्ति
 के आधीन ज्ञान विज्ञान यह गुप्त मत पाछे कहे वैठे गुरु सुनि अरु द्विज सज्जन
 या प्रमाण से समा में मुख्य गुरु तेहितें कर जोरे वारामजू की शील हेतु वाधर्म
 के अंगी करने को तात्पर्य ग्रंथकार वर्तमान समय में परस्पर शैव वैष्णव का
 महा विरोध विचार के परम धाम यात्रा के अंत समा में श्रीराम बचन द्वारा
 शंकर भक्ति मुख्य साधन और श्रीराम भक्ति साध्य फल यह सिद्धांत किये या
 को कोई विस्ते जानत हैं ताते गुप्त कहे या रीति से कुछ संदेह नहीं है प्र०
 बहुत जन्म के सुधि मोहि आई बुल्यादि ८० शं. का जन्मानंतर स्मृति रहती है
 पुराणान में तो इतिहास लिखा है परंतु इतिहासन में तात्पर्य है कि जो जल
 जल में मिले वा थल का ओही फिर आवेगा एही ते जीवन में अनेक
 वाद हैं। काल भी एक है परंतु केतना विस्तृत हीन है सो चारों युगन के व्य
 वस्था में ख्यात क्या चारों युगन में धर्म ये बी चले हैं कुंडलिया ॥ प्रथम का
 ल एके रह्यो बहु विधि किमि कै जाइ युग सूक्ष्म स्थूल सुन सुत एके दर
 साय आय गत अंक न देखो एके नव गनि जाय दशा फिर सूक्ष्म परे खो
 डोल्यंत्र इति वेद युग कालहि अंतर खोल पितामह एक में कवहु जुग मन
 तर १ श्री स्वामीजी कपट कही प्रभु चार युगन के सतयुग ब्रह्मा चहुं मुख
 चारों वेद रहे त्रेता द्वापर विष्णु जीव आनंद लहै १ रुद्र आय कलि कै के
 चौदह भुवन इहै जीव लहा विग्राम जहां असभाव अहैं २ मुख ते बिनु
 साधन ने निर्मल ज्ञान चहैं सो कलिके दोषन को नित मन लाइ गहैं गुण
 में कलि को रूप लोक विपरीति कहै देव दया विन कैसे केउ मुणहि गहैं अब
 कलियुग आवा घट घट पातक छावा कलि को प्रथम चरण निन जानों द्वा
 पर अब को द्वै चरण बखानो प्रथमादि को निसरो कर मानों चौथो

बजावा वृद्ध परबद्ध अकर्म अदाया पाप चरणा को चौखल खाया चरणा
 धर्म को एक बचाया सोई बीज बनावा २ ज्ञान योग जिव लेइ पराने धरम
 कर्म के रूप हे राने कलि के उर साधन यहराने नामें पार लगावा २ नाम प्र
 ताप स दोन जागा जाके हर कलि को तम भागा बाहुत देव चर्ण अनुरागा
 जासो यश श्रुति गावा ४ बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव के जन्म नही
 होत और चार अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जात है जैसे बाल वृद्ध
 त्यादि कोई सिर्फ लहका देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखे गा सो न
 हों पहचाने गा और जन्म संसार का नाम है और चारों युग का जो भेद
 कहते हैं सो प्रमाण तो समान जानव याही ते धरमन में विरुद्ध भासत है जै
 से समान औ विशेष सो सब मतन में सामान्य विशिष्ट पायो जात है औ
 विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखो परै है जैसे मांस भक्षण में विंध्य के दक्षिण
 वासीन को अज्ञा उत्तर वासी पतित होत हैं इनन धातु तौ जीव में चरित
 र्थ नही होत जैसे घट मठ आकाश को नाश पावत है याही ते जीव व्यापक
 जानो जात है और जन्म स्वरूप स्थूल शरीर करके भासत है जैसे २४
 लक्ष योगि जन्म परमित कियो सो संस्कार और काल को धर्मन को मुख्य
 जानवो साम आये दो मन युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार
 बोध रहत निज मोह बस शंका करत उदार २ मानस मन अनेक युत मानी
 मन गय नहिं । मन साहस शंकावली समव साधु महि माहि ॥ ३ ॥

इति सप्त कांड शंकावली संक्षेपः ॥



श्री गणेशाय नमः ॥ अथ विश्राम अंग प्रारम्भः ॥

विश्राम नाम धर्मो नाको हेतु दोहा विषे आप आकाश महं मन भदका जिमि
 चंग । यहि भू उचार विचार मग प्रेरक का थिर अंग १ अथ रामायण के परमार्थ
 पक्ष को विचार । दो । रामायण दुस मोक्ष फल गायत्री गठ बीच राम सुरक्षा अंक
 रित वेद मूल शुभ बीज २ वेद वेद परपुरुष भो दशरथ तन यह धार बालमीक
 ने वेद भो रामायण अवतार ३ कुंज सुनि निज संहिता माही कसो अनूप रामायण
 अरु वेद को भिन्न न जानो रूप ४ भक्तमाल वर ग्रंथ में कीन्हो यह निरधार बालमी-
 क तुलसी भये कटिल जीव निस्तार ५ वेद मूल हृद ते चली कथा भूमि के द्वार आत-
 म ज्ञान तरंगिनी पान कात मुख सार ५ वार्ता याते गूढ़ाशय वेद रूप यह रामायण
 कथा भागने समुणालीला प्रति पादन करतु है । अरु अंतर आशय ते परमार्थ पक्ष
 ऐश्वर्य छियाइ कै कहत है यथा नानुष देह ब्रह्मांड जानो प्रव्रत मार्ग सोइ लंक दुर्ग
 सो मन रूप मया मुख रच्यो है नाना मनोरथ तो लंका में सुंदर मंदिर समूह जानो
 अविद्या समुद्र है सो राग द्वेष आदि मकर नक सर्पन ते पूरण भयंकर विनीर्ण अ-
 थाह अति दुस्तर है अनेक संकल्प विकल्पता में भंवर है विषय आसा अंव कत-
 रंग है मोह रावण है अहंकार वाको भाई कुंभ करण है काम मेघनाद है क्रोध
 दिवानक गर्व नरांतक लोभ महादर दुष्ट मत्सर अति कायबीर है कपट अकपन है द्वेष
 दुर्मख बीर मद मूल पाणी दम महा पार्श्व अधर्म दूषण असत्य कुंभ है पाषंड विरु-
 भ है असत्संग १ आलस्य २ विक्षेप ३ आदि मोह राय के मंत्री जानो सत रज तम गुण
 सेनापति जानो अयश अनर्थ भ्रम संसयादि धूम्राक्ष पूषाक्ष ओणिताक्ष इत्यादि
 सुख्य बीर यथा योग्य जानो विद्या मद धन मद आदि अनेक मोह रावण के राक्ष
 स सेना है समता रूपनखा असत् वासना लोलपता ईर्ष्या हिंसा लज्जा अश्रद्धा
 आदि अनेक मोह भूपति की रानी है भ्रष्टता धृष्टता चिंता कृपणाता कामना अनेक
 विषय आसा आदि अनंत राक्षसी जानो जीव विभीषण है सो दुष्टन के समूह में
 चिंता ग्रसित बसत है दुहां विवेक रामजू विचार लक्ष्मण ब्रह्म विद्या सीताजू
 ज्ञान दशरथ भक्ति कौशिल्या विषय बन भजन द्वार अरु प्रव्रति लंका दहन
 में प्रवीण जो वैराग्य सो हनुमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सति संगज
 भवान ३ शील नील ४ सतोष नल ५ धीरज केशरी ६ अभ्यास गंध मादन ७
 जप तप संयम श्रवण निदिध्यासना आदि को मोक्ष के सब सावधान कुमुद १
 द्विविद २ मयंद ३ सस ४ गंज ५ गवाक्ष ६ मवय ७ वृषभ ८ सुषेन ९ वेगदर्शी १०

आप वानर भालु वीर यथा योग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४
 प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदि देव वृंद जानो मोह लंकेश
 ने सब साभीत अरु दुखी ॥ इति संक्षेपः ॥ दो० चलो महा दल साज के नृप
 विवेक इति वीर पहिर कवच श्रुति शास्त्र को अचल महा रण धीर १ सैन
 साज इत मोह नृप आयो रण भूधाय । अति विचित्र सब सुभट सुत मंत्री वं
 धु सहाय २ दाढो भयो विवेक नृप मनसा भूमि ममार बहुत सुभट जूरे जहां
 वही रुधिर काँ धार ३ वार्ता तव असत्संग मंत्री के मंत्र ते मोह नृप अहंकार
 को जगाय के रण भूमि में पठायो सिंह नाद करत महा सेना लेइ चढ़्यो तामस म
 हा कोलाहल भयो बैराग्य सत्य धर्म आदि सब वीरन को घायल करि विवेक रा
 य सो महा युद्ध करत भयो तव विवेक राय आत्म चिंतन सर ते अहंकार को शिर
 काट गिरायो तव सेना में महा हाहाकार भयो दो० समाचार सुनि मोह नृप
 दै गयो निपट उदास । शोक अग्नि उर में जगत दीरघ लेत उसास १ वार्ता उ
 त ते मोह को सुत महा बली अति धूर्त मदन वीर महा सेना लेइ चढ़्यो इत ते
 विवेक राय की आज्ञा ते विचार ऊँवर बैराग्य सत शीलादि वीर सेना ले चढो
 परस्पर महा युद्ध भयो मोहन सोषन उच्चाटन आदि अनेक बाणन ते विचार
 ऊँवर को मार्यो ता पाँके असत्वासना बरछी उर में मार के विचार को मूर्च्छित
 कियो दो० तब बैराग्य विचार करि दीनो सतो अनूप अहो बंधु शोचत कहा
 सोधो अरु स्वरूप १ जग मिथ्या रज सर्प वत् सत्य वृद्ध निरधार छुद्रानदन
 नित धरो हरी अंग विचार २ वार्ता तव विचार वीर सावधान होइ के मदन
 को ललकार्यो दो० रे निलज्ज पापी कुटिल डर बुझी धिक् तोहि कहा वस्त
 ले वस करत लेत कृपण जन मोहि १ वार्ता या रीति ते परस्पर प्रचारत पुनः
 महा युद्ध भयो तव विचार वीर ने मदन महा भट को मार गिरायो दो० समाचा
 र सुन मोह नृप भयो सो निपट अधीर हृदय दाह अति शय भयो विलपन
 कंप शरीर १ गई आस मोहि राज्य की मरो पुत्र वर वीर कुल मंडन अति का
 म सो दूजो वीरन धीर २ वार्ता तव अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन्ह के
 मंत्र ते सजग दै के मोह नृप विवेक राय सो महा युद्ध करत भयो दो० उ
 द युद्ध भी परस्पर सो दरायो नहिं जात कबहुँ दवत विवेक नृप कबहुँ
 मोह सकात १ राजा मोह विवेक को यह भयो बड़ काल नृप विवेक बल
 अधिक लहि भो मन मोह बिहाल २ अवाण मनन मिथ्या सवर निज आयु

धलै हाथ गुरु श्रुति बचन प्रमाण सरहने मोह के साथ ३ मरो देखि नृप मोह
 को बहुतक कटक पराई बहुत सुभट जूके तहां पाछे धस्यो न पाय ४ वार्ता मोह
 नृपति को रण भूमि में मरो देखि ममता लक्षा चिंता ईरषा आदि नारि अ-
 निशोक युत बिलषि करत भई इहां दोहा । सत्य शील वैराग्य लौं मुदित सक-
 ल परिवार सुरनर मुनि जय जय कियो दाहो मोह अपार १ वार्ता जीव स्वरा-
 ज्य पायो तब धर्म सत्य वैराग्यादि बीरन सहित अरु बिचार बंधु सहित बिवे-
 क राय ब्रह्म विद्या लेइ के निज राज धानी में अकंटक राज्य करत भयो बिवे-
 क चक्रवर्ती भूपति को जब ते प्रताप रवि उदय भयो तब ते काल कर्म गुण स्व-
 भाव हृत दोष दुरख काहू को न भयो तीनों लोक में प्रकाश भयो तम कहूं न र-
 ह्यो अविद्या निसा नाश भई अघ उलूक छिप गये क्रोधादि कैरव सकचे
 मत्सर मानादि चोरन को अभाव भयो सुख संतोषादि कोक गये विगत शोक
 भये प्रबोध चंद्रोदय नाटक आदि सद ग्रंथन के संमत से यह परमारथ पक्ष
 अति बृह परम प्रमाणिक जानो और नाटक अनेक दोष गुण के प्रधानता क-
 र के यथा बिवेक मोहादि करके नाम अनेक ता नाम में शंका न चाही ॥
 ॥ इति प्रमाण श्रीतुलसीकृत विनय पत्रिका ॥ यथा देव देहि अवलंब
 कर कमल कमला समन दमन दुरख समन संताप भारी ज्ञान रा केस ग्रामन
 विधुं तुदं दलन काम करि मत्त हरि हूषनारी १ देव बपुष ब्रह्मांड सुवृत्ति ल-
 कापति दुसा रचित मन्त्र दनुज मय रूप धारी किविध को सौध अति रुचिर
 मंदार निकर सत्व गुण प्रमुख त्रय कटक कारी २ देव कु नृप अभिमान
 सागर भयंकर घोर विपुल अवगाह इस्तर अपार नक्र रगादि संकुल
 मनोरथ सकल संग संकल्प वीची बिकार ३ देव मोह दस मौलि तद भ्रा-
 त अहंकार पाकारि जित काम विश्राम हारी ४ देव दुष दुर्मुख दंभ पर
 अकंपन पट दर्प मनु याद मद मूल पानी अमित बल परम दुर्जय निशाचर
 चमू सहित पद वर्ग जो यातु धानी ५ देव जीव भय दंघ्रि सेवक विभीषण
 बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता नियम जम सकल सुर जोगा लो केश
 लंकेश वस नाथ अत्यंत नीता ६ देव दीन उद्धारण रघुवर्य करुणा भवन
 समन संताप पापौष हारी बिमल बिज्ञान विग्रह अनुग्रह रूप भूपवर बिबु-
 ध नर्मद खरारी ७ देव विष्णु बिरब्यात विप्रेश विष्वायतन विष्णु मर्याद
 आलारि गामी ब्रह्मवर देव वागीश व्यापक विमल विपुल बलवान नि

वाराणसी २ देव सर्व मेवात्र त्वद्रूप भूपाल मणि व्यक्त मव्यक्त गत भेद
 विघ्नो भुवन भवदंस कामारि बंदिता पदद्वंद्व मंदाकिनी जनक जिघ्नो ३
 देव प्रकृति महतत्त्व शब्दाद गुणदेवता व्योम मरु दग्नि अवलंबु उर्वी व
 दि मन इन्द्रिय प्राण चिंतातमा काल परमाणु चिच्छक्ति सुर्वी ४ देव आ
 दि मध्यांत भगवंत त्वां सर्व गत मीश पश्यंति ते ब्रह्म वादी यथा पद तंतु घट
 मृत्तिका सर्प स्वर्ग दारु करि कनक कट कां गदादी ५ देव गूढ गंभीर गर्व
 घ्न गूढार्थ वित गुप्त गोपीत गुरु ज्ञान ज्ञाताज्ञ यज्ञान प्रिय प्रचुर गरिमा गार
 घोर ससार परपार दाता ६ देव सत्य संकल्प अतिकल्प कल्पांत कृत कल्पना
 नीत अहि तल्पवासी वनजलोचन वनज नाम वन दाम बपु वनचर ध्वज कोटि
 लावाय रासी ७ देव सुकर दुष्कर दुर्गराध्य दुर्व्यसन हर दुर्ग दुर्द्वेष दुर्गतिह
 र्ता वेदगर्भर्भका दम्भ गुण सर्वाङ्ग परगर्व निरबाय कर्ता ८ देव भक्त अ
 नुकूल भवशूल निर्मूल करि तूल अध नाम पावक समानं तरल दृष्टा तामी
 तरणि धरणि धान सरणि अयद्वरण करुणा निधानं ९ देव बहुल वृंदारका वृं
 द वृंदारु पद वंदि मंदार मालोर धारी पाहि माही स संताप संकुल महा दास
 तुलसी प्रणीत रवनारी १० देव संसार कांतार पति घोर गंभीर घन महान तरु
 कर्म संकुल सुगरी वासना वल्लि परकंटका कुल विपुल निविड विटपाटवी
 कठिन भारी ११ देव विविध चित वृत्ति स्वर्ग विकार सेनो लूक काक कट ग्रध्र आ
 मिष अहारी अखिल खल निपुण कुल छिद्र निरखत सदा जीव जन पथिक
 मन खेदकारी १२ देव क्रोध करि मत्त मृग राज कंदर्प मद दर्प वृक भाल अ
 तिउग्र की महिष मत्सर क्रोध सूकर सूर फेरु कुल दंभ मार्जार धर्मा १३ देव
 क प न मर्कट विकट व्याघ्र पारखंड दुखद मृग व्रात उत्पात कर्ता १४ हृदय
 अवलोकि यह शोक शरणागत पाहि मां पाहि भो विश्व कर्ता १५ प्रबल अ
 हंकार दुर्घट महीधर महा मोह गिरि गुहा निविडांध कारं चित वैताल म
 नुजाद मत्त प्रेत गण रोग भोगी घ वृद्धिक विकारं १६ देव विषय सुख ला
 लसा दंस मसकादि खल झिल्लि रूपादि सब सर्प स्वामी तत्र आक्षिप्त तव वि
 षम याया नाथ अध भय मद व्यालाद रासी १७ देव घोर अवगाह भय आप
 गा पाप जल पूर दुः प्रेक्ष दुस्तर अपाणायक पड वर्ग गो नक्र चक्रा कुल कल
 शुभ शुभ नीच धास १८ देव सकल संघट पोच शोच बस सर्वदा दास तु
 लसी विषम गहन गस्त चापि खूबंश भूषण कृपा करि कठिन काल

विकराल कलिकाल वस्तु ८ प्रमाण श्रीस्वामी जू रामचरित कह का
 हि लगाय सुनि मति हूं भगमाय विभुवन भवि प्रगट होइ कै राघव जन्म
 कहाय भावन हूं को राम प्रकासत एतो पद छहराय ९ कोप मुनिन की
 सिखा रूप धरि प्रगट जनक पुर आय राम प्रिया बन काज साधि पुनः
 बन में गयो समाय २ राम सिया को जनम करम नहिं नित ही उदित सु
 भाय ते कैसे जनि हैं वे मदिरा अंचे रहैं बैराग्य ३ देव भाव बानर भालू
 तन धारि कै भये सहाय विभुवन भवि विभुवन धनी बन रहा अवध में
 छाया कुंभकर्ण अहंकार राम गर्व प्रहारी जाको छुवत गिरत ब्रह्मादिक
 ज्ञानी होत असार परब्रह्म हूं निर्गुण भासा लगत अकारह कार १ श्री
 श उचाई भुज बल औ दृढ पद गत हिक्का सब को दुख दायक अति नि
 र्भय अंग अंग अपकार २ राम प्रथम ताके सुज काटे तब शिर काट प
 चारि पद काटे तब हूं धर दीरत डारी सिंधु मरारि ३ तजै उचाई मान
 गैर तम धरिये दीन बिहार देव सुदित श्रीराम चंद्र पर बर्षत सुमन अ
 पार ४ इंद्र जीत जो काम है सबहीं सतावत कुल के मास्त परगट मारत वी
 रन में सरनाम जाको नाम सुनत ही कांपैं ब्रह्मादिक सरधाम सुनि व्रतहिं
 नसावत १ ज्ञानी योगी बैरागिन को मोल लेत बिनु दान ज्ञान ध्यान
 सब बिसर जात है चमकत आछो चाम तब नाच नचावत लषणायती जा
 हिर हनुमंतो ब्रह्म चरण विश्राम काम शत्रु इनहीं को पठवा कामहनन को
 राम तब मा मन भावत ३ इंद्र जीत कुल बल करि दारालक्ष्मणा एक वा
 रातें मार बाज रहा है देवन गारा मिटा जगत को घाम लागे गुण गावत
 ४ इत्यादि दोहा वेद रत पुनि शास्त्र सब आगम सकल पुराण एक वा
 क्य ता सबन के बेद्य एक भगवान १ अज दशमहं विषमता विज्ञ समैन
 बिरोध तहं दुविधा कहं पाइयतु जहं निज पूरा बोध २ जैसे लहरि समु
 द्र में पृथक् भाव दरसाय पल्लव मिलत जब सिंधु में एक भाव दै जाय ३
 जैसे पुखासी सकल कहूं बैर कहूं प्रीति कठिन परे जब नगर को तब सब
 एकै रीति ४ एक पिता के पुत्र बढ करत परस्पर रारि सुनि निदा निज ताके
 एकाहि होहिं बिचारी ५ एक नगर के वहत पथ सकल काटिल बल जात
 अंत प्राप्य एकै नगर नहिं बिरोध कछु ताव ६ जैसे नाना देस ते चली नदी
 बह भाति भई अमेद मिल सिंधु में जैसे मति की पांति ७ आदि मध्य

अरु अंत लों ज्यों तरु दीज सरूप लघु दीर्घ लों ग्रथ सब व्यापक बह अन्नूप
 ८ निगमागम बहु मत कहत यदपि कांड वय भेद एक वाक्य ताके भये
 एकै प्राप्य अखेद ८ प्रकृति दोष ते मोह तम छाये मति संसार। जल्पित क
 ल्पित भेद बहु मत मदिरा मतवार १० गुरु श्रुति वचन बिचार खिउदै दोष
 निर्मूला एक वाक्य ता ज्ञान लहि मिटत मोह मय शूल ११ वार्ता यह ले
 रामायण की शंका में एक सत्यत्व दूसरो प्रसंग भेद में लिखा सो सत्यत्व
 में नाटक रीति कर के और प्रसंग काल युगादिकी एक वाक्य ता कर के क
 ल्प भेद औ देवन में अभेद ते संशय नहीं जानो गयो सोरठा रामायण सि
 द्धांत ज्ञान भक्ति संपुट कियो नाम रत्न विख्यात प्रेम भक्ति मणि लेस ते ॥
 वार्ता प्रथम प्रकाश में ज्ञान भक्ति संपुट में नाम रत्न को स्थापन कियो
 दोहा। स्थान सर्ग विसर्ग पुनि पोषण आदि बिचार दलक्षण सु पुराण
 के प्रथमहिं कहे उदार २ वेद अर्थ के बोध कह अंग शास्त्र षट मान। शा
 स्त्र अंग में सबन को भाष्यो अर्थ सुजान ३ पूरव मीमांसा विषे धर्म तत्व
 प्रतिपाद्य स्वर्गादिक फल धर्म को ज्ञान प्रयोजन साध्य ४। वैशेषिक शा
 स्त्रहि कियो सु मुनि कणदि अनूप। सप्त पदार्थ ज्ञान फल भावाभाव स
 रूप। न्याय शास्त्र गौतम ऋषि भाष्यो तर्क प्रधान प्रमाणादि षोडश
 अर्थ बोध प्रयोजन जानि ६ योग शास्त्र पातंजली मुनि कीनो सुख कंद
 जावत वृत्ति निरोध ते दूत भव को फंद ७ सांख्य शास्त्र को विषय सुख
 प्रकृति सुपुरुष विवेक हनि त्रिविध दुख मुक्ति सुख कपिल मुनि मति टेक
 वेद व्यास वेदांत को आचार जब लेखु जीव ब्रह्म के एक ता विषय मो
 क्ष फल देखु ८ बहु शारदा सारवी सुखद वेद अपौरुष वाक चार वेद
 वय कांड फल मोक्ष अवांतरनाक १० तंत्र भाव में शिव कियो यंत्र मंत्र
 मति पाद्य शंभु शक्ति के ज्ञान ते मोक्ष आदि फल साध्य ११ वार्ता हि
 तीय प्रकाश में पुराण शास्त्र वेद तंत्र को सिद्धांत अर्थ लिख्यो दोहा ॥
 भरत आदि साहित्य के आचारज मति चारु कथित तासु दस कर्म फल
 रामायण सिंगार २२ वार्ता तृतीय प्रकाश में यावत्काल व्यंग निरूप
 न कियो चतुर्थ प्रकाश में प्रसंग अंग कर के यावत् रामायण तात्पर्य
 और छंद दोहा चौपाई को नेम कियो दो. लंका शंका दहन को
 हनुमत बुद्धि उदार मुख्य प्रश्न उत्तर लिखो समुहै सुमति उदार २३

वार्ता पंचम प्रकाश में मुख्य मुख्य शंका समूह को समाधान कियो
 दोहा । अमर सिंह आदिक जिते कोश कार सुउदार विषम शब्दके अ
 र्थ को परकाशक उपकार २४ वार्ता छठे प्रकाश में कोश अंग कर्के वि
 षम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में विश्राम अंग
 कर्के नाटक रीति भाव प्रधान हैं रामायण जू कथा भाग से सगुण प्र
 तिपादक औ अंतर आसयते परमार्थ पक्ष सत्यत्व प्रतिपादक यह
 निरूपण कियो औ प्रसंग के भेद में देवतन को अभेद जनाय के अन
 त शक्ति प्रभु में सब अधिरुह जानो चाहिये और कलियुग व्यवस्था
 इत्यादि समदरसायो और प्रथम लिख आये तो मुख्य अर्थ है सो ए
 ही अक्षरन में ज्ञात हैं और जो शंका करत हैं यह जो सप्तम अंग लि
 ख आये याते प्रगट बोध होइ गो एतेद्व में जो शंका करें तहां प्रमाण
 चौ० एतेद्व पर कहि जे शंका मोहिते अधिक ते जड़ मति रको । इति
 दोहा । करि प्रसंग के अंगतें हरि यश हेतु जनाय यथा भानु समता लि
 षे खद्योतो गनिजाय १ रामायण सरसिज सरिस चहियत भानु प्रकाश
 यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सकत विकाश २ रामायण के अर्थ को
 को समर्थ भति वंत यथा सिंधु खग चोच भरि तृप्ति लहत नहि अंत ३
 को तुलसी भाषा कवन कौन बेद को सार कौन कोश तिहि तिलक कोना
 ही कहत गंवार ४ मत्सर मदमाया मदन मारे मान मगेर । रामायण
 जाने कहा परधन परतिय चोर ५ कवि कोविद रघुबर भगत मानस मा
 न सुजान की सुन सिंधु गंभीरता मंदिर गिरि पहि चाना मानस पारावा
 र को पारवार को जान मंदिर गिरि बूझत जहां मम मति की परमान
 ७ अष्टादश पद संहिता यामल तेन विचार धर्म नीति स्मृति सागर हि
 तुलसीकृत विस्तार ॥ चरखे ॥ श्रीकाशी पति पितु की आत्मा पाइ द्यो
 गज राज कथनि नम मेल मिलाइ ८ चौ० सरल अरथ आखर की थोरी
 सहत प्रभाव सांतरस वीरी दूर देश दरसावन हारी । अैनक सग विधुवि मल
 तमारी ॥ १० ॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपिका
 टीकायां विश्राम अंग सप्तमः ७ प्रकाशः मानस दी
 पिका समाप्ताः संवत् १८३० कार्तिक शुक्ला ११ शनिवार ॥

विज्ञापन पत्र

यह पुस्तक अर्थात् रामायण तुलसीकृत जो अति प्रसिद्ध और बहुधा देहली और मेरठ और बनारस के यन्त्रालयों में छपी है इस छापेखाने में प्रथम बार पद २ पृथक् २ करके छपी है - कि हजारों अशुद्धियां जो पहिली छपी हुई में वर्तमान थीं अनेक प्रतियों से यन्त्रालय के पण्डितों ने यथा शक्ति शुद्ध की और कोश अक्षर क्रिया पद सहित अति श्रम से रचना किया गया कि जिस का हाल देखने और पढ़ने वाले विचार करेंगे -

उक्त रामायण के विशेष हमारे यन्त्रालय की पहली छपी हुई रामायण जो अति शुद्ध और सब भारत वर्षीय भर में अति विख्यात और प्रचलित है अबतक ५०००० पुस्तकें छपी हुई वर्तमान हैं -

विशेष इन रामायणों के एक और रामायण बहुत श्रेष्ठ और बहुत मोटे अक्षरों की जो आज तक हिन्दुस्तान के किसी यन्त्रालय में नहीं छपी सुदित हो रही है कि जिस को बालक और बूढ़ भी दूर से वाच सकते हैं जिस को दरकार हो हमारे छापेखाने से पत्र की द्वारा मद्रसूल अदा कर के मंगाले -

और जो इस रामायण को सौदागरी तौर पर खरीद करेंगे उनके कमीशन भी ही जावेगी -

उक्त रामायणों के विशेष बहुधा फ़ारसी, अरबी, और उर्दू पुस्तकें इस यन्त्रालय अर्थात् मुंशी नवल किशोर लखनऊ और कानपुर में छपी हुई वर्तमान हैं जिसकी फ़ैहरिस्त छपी हुई वर्तमान है जिस मनुष्य को लेना मंज़ूर हो पत्र के द्वारा मंगाले और हर तरह का काम शिलाहार और शीशाहार और फ़ारसी और अरबी इस छापेखाने में सुदित हो सकता है -

और महाभारत भाषा जो अनेक कन्दों में काशी नरेश महाराजाधिराज की आज्ञा से कलकत्ते के किसी छापेखाने में छपी थी हमारे टैप के कारखाने में उनमता से छप रही है और शीघ्र ही वह महासागर १८ पर्व सब लोगों की जो इस के इच्छुक हैं प्रगट होगा जिन को खरीदना मंज़ूर हो मुंशी नवल किशोर के यन्त्रालय से दरखास्त करें

6424.

इतिहास

“बालमीकि नारद घट योनी ।

निज निज सुखनि कही निज होनी” पृष्ठ २

बालमीकि जी ने राम जी से कहा कि मैं पहिले व्याधा का काम करके अनेक जीवों का घात किया करता और उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुम्बों का पालन करता एक दिन सप्रच्छपियों से अकस्मात् मार्ग में भेट भई सो उनका भी जीव घात करने के लिये मैं तत्पर हुआ तब उन्होंने ने मुझे अत्यन्त आतुर समझ के शिता दिया सो उनके उपदेश से आप का नाम विपरीत करके मरा मरा जपते-२ मैं इस स्वयं गति को प्राप्ति हुआ कि आप साक्षात् ईश्वर मेरे स्थान विषे पधारें ॥

जब वेदव्यास पुराणों को बनाय चुके परन्तु उन्हें संतोष न भया तब नारद जी से कहा कि महाराज इसका कारण क्या नारद जी ने सुनों में पूर्व में दासी पुत्र रहा परन्तु मेरी माता जिस के यहां काम करती थी वे साधु सेत्री रहे उनके स्थान में साधु लोग आवैं तब साधुओं का भूठा भोजन जो शेष बचे उसे मैं खाऊँ और उनको सेवा किया करूं उस से मेरी ऐसी निर्मल बुद्धि हुई और इस गति को प्राप्ति हुआ अतएव सन संगति की सहिमा है इस से अब तुम्हें कुछ भगवत जस कहै तब तुम्हें संतोष होगा तब व्यास जी ने भागवत बनाया ॥

और अगस्त्य ऋषि ने महादेव जी से कहा कि मेरे पिता मित्रावरुण तप करते थे कि आकाश मार्ग से रंभा शृङ्गार किये जाती थी सो उनकी दृष्टि पड़ी काम उत्पन्न भया तब मित्रावरुण ने वीर्य को घट में रख दिया उससे मेरी उत्पत्ति हुई इस से मैं घटज हुआ सो ऐसी नीच बुद्धि और नीच स्थान से मैं उत्पन्न हुआ परन्तु सन-संग से इस दशा को प्राप्ति हुआ ॥

“सियनिंदक अध ओघ नसाए ।

लोक विसोक बनाइ वसाए” पृष्ठ ६

अयोध्या में जब श्रीरामचन्द्र राजा रहे तब एक रजक की स्त्री बिना पति की आज्ञा पिता के भवन चली गई तीन दिन के उपरांत जब वह पति के गृह आई तब वह रजक बोला कि तू मेरे घर से जा मैं घर में नहीं रखूंगा मैं राम नहीं हूँ कि सीता ११ ग्यारह महीना रावण के घर में रही फिर उसे अपने गृह में रख के रानी बनालिया ऐसा व्यंग वचन कह के स्त्री को निकाल दिया इस को सुन रामचन्द्र जी ने जानकी को घर से निकाल दिया और अयोध्या पुरी में बसने से रजक को सीता के निन्दा के प्राप से समा करके परम धाम दिया ॥

“महिमा जासु जान गनराज ।

प्रथम पूजियत नाम प्रभाज” पृष्ठ १०

ब्रह्मा ने सब देवताओं से कहा कि प्रथम पूज्य पद के योग्य कौन है सो यह सुन सब देवता आपस में लड़ाई करने लगे तब ब्रह्मा बोले कि तुम सब में से पृथ्वी की परिक्रमा करके जो मेरे पास पहिले आवैगा उसी को प्रथम पूज्य पद हम देवेंगे सब देवता अपने २ वाहन पर बैठ के दौड़े पर गणेश जी मूसे पर सब के पीछे पड़ गए और कार्य की हानि समझ अत्यंत व्याकुल हुए तहां नारदजी उनको मिले और इन के परिताप का कारण सुन कहा कि तुम पृथ्वी में राम नाम लिख के उस की प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा के पास चने जावो तब गणेश जी वैसाही कर ब्रह्मा के निकट गये और जब और सब देव भी ब्रह्मा के सन्मुख आये तब ब्रह्मा आदि सब देवताओं ने मिलके श्रीराम नाम की महिमा समझ गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया इस से राम नामकी महिमा है ॥

दूसरी कथा । महादेव जी ने श्यामकार्तिक और गणेश जी दोनों पुत्रों से कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा करके पहिले मेरे पास आवै उसी को हम प्रथम पूज्य पद देवेंगे सो सुन श्यामकार्तिक मोर पर बैठ के अगाड़ी गए और गणेश जी मूसे पर पीछे पड़गए तहां देरी देख के नारद के उपदेश द्वारा नाम की परिक्रमा कर महादेव के पास गए तब शिव जी ने ध्यान पूर्वक विचार कर और श्री राम नाम की महिमा स्मरण कर गणेश जी को प्रथम पूज्य पद दिया ॥

“सहस्र नाम सम सुनि शिवबानी ।

जपि जेई पिय संग भवानी” पृष्ठ ११

एक समै महादेव जी पाक बनाय थाल में परास पार्वती को पुकारा हे प्रिया आवो भोजन करें तब पार्वती बोली कि मैं विष्णु सहस्र नाम का पाठ करके तब प्रसाद पाती हूं सो अभी पाठ नहीं किया तब महादेव जी बोले कि हे पार्वती श्री राम नाम जो है सो विष्णु के सहस्र नाम के तुल्य है सो एक बार राम नाम उच्चारण कर आय के भोजन करा तब पार्वती जी ने ऐसा ही किया तब महादेव जी इनके मन की प्रीति निश्चय पूर्वक और अपने वचन का विश्वास देखि के अति प्रसन्न होय पतिव्रता सिंगमनि किया और ऐसा भी है कि गौरी शंकर अर्द्धाङ्गी स्वरूप तभी से हुआ ॥

“अत एव हरषे हेतु हेरि हरही को ।

किय भूषन तिय भूषन ती को ” ॥

“नाम प्रभाव जान शिव नीका ।

काल कूट फल दीन्ह अमी का” पृष्ठ ११

जब विष्णु ने कच्छपावतार लेकर समुद्र को मथा तब उस में से चौदह रत्न निकले मो सब देवता प्रसन्न होय अपनी इच्छा के अनुसार तेरह रत्न को बांट लिया और चौदहवां रत्न जो कालकूट अर्थात् हलाहल विष के निमित्त सब देवता महादेव जी का स्मरण कर इन से कहा कि महाराज इस विष में बचाइए नहीं तो यह अपनी ज्वाला में तीनों लोक को भस्म कर देगा तब महादेव ने श्रीराम यह शब्द मुख में उच्चारण कर उठाय के पीगए उप के प्रताप से उस विषने अमृत का फल दिया कि अमर हो गए ॥

“ध्रुव सगलानि जपेत् हरि नाजं ।

पाएत् अचल अनूपम ठाजं” पृष्ठ १३

स्वायम्भू मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद के दो स्त्री थीं तिसमें बड़ी रानी के पुत्र ध्रुव हुए मो एक समय राजा छोटी रानी जिस पर राजा की अत्यन्त प्रीति थी उसके पास बैठा था उस समय ध्रुव जाके पिता की गोद में बैठ गए तब रानी ने ध्रुव को गोदी में उतार यह कहा कि मेरे पेट में जन्म लेते तब इस गोदी के अधिकारी होते इस बात को सुन ध्रुव ग्लानि में अपनी माता से जाय कहके तप करने को चले पश्चात् राजा ने आप ध्रुव को बहुत सम्झाया राज्य देने कहा परन्तु ध्रुव नहीं फिर वहां नारद ने ज्ञान उपदेश दिया सो जप करके सबके परे लोक के अधिकारी भए ॥

“ब्रह्मा सभा जम सनदुख माना ।

तेहितें अजजं करहिं अपमाना” पृष्ठ २८

महादेव जी कहते हैं कि हे सती ब्रह्मा की सभा में विष्णु आदि सब देवता के साथ हम बैठे रहे मो उस समय में दक्ष तुम्हारे पिता आए सो उन्हें देख सब देवता उठे परन्तु मैं और मेरे संग ब्रह्मा विष्णु नहीं उठे सो दक्ष क्रुद्ध होय उस सभा में कुवाच्य मुझे कहा और तभी मे द्वेष मान मेरी प्रतिष्ठा होन करने में उद्यत रहे और अपने यज्ञ में हमें न्योता नहीं दिया ॥

“दक्ष सुतनि उपदेमेन्हि जाई ।

तिन्हफिरि भवनन देखा आई” पृष्ठ ३५

जब दक्षप्रजापति ने प्रथम बहुत से पुत्र उत्पन्न करके आज्ञा दिया कि सृष्टि करो तब वे सृष्टि के अर्थ तप करने को गये वहां नारद ने उन्हें सबों को ऐसा ज्ञान उपदेश किया कि सब के सब विरक्त होय वन में तप करने लगे दक्ष के यह में फिर नहीं आए तब दक्ष ने कन्या उत्पन्न करके सृष्टि को बढ़ाया सो हे पार्वती नारद शिवा सुन के घर छोड़ के वे भिखारी हुए ॥

“चित्र कैतु कर घर उन्ह घाला” पृष्ठ ३५

आगे फिर चित्रकेतु राजा का समाचार सुनो चित्रकेतु राजा की कोटि स्त्री थी परंतु लड़का एक नहीं तब किसी मुनि के आशीर्वाद से छोटी रानी के एक पुत्र उत्पन्न भया जब वह लड़का वर्ष भर का भया तब कोटि रानियों ने उस लड़के को विष देके मार डाला तब वह मृतक लड़के को राजा गोद में लिए विलाप करता था कि नारद जी आये राजा को ज्ञान उपदेश करने लगे परंतु राजा को ज्ञान न हुआ तब नारद जी ने उस लड़के को जिलाय कहा कि देखो तेरे मरने से राजा अति व्याकुल है तब वह बोला कि हे राजा मेरी पूर्व जन्म की कथा सुनो मैं पहिले जन्म में राजा रहा सो राज्य से विरक्त होके बन में जाय भिक्षा मांग हरिभजन करता था एक दिन एक स्त्री ने मुझे गीला गोइठा दिया उसके भीतर चिउंटी रहीं अग्नि के संस्कार से सब मरगई सो सब चिउंटी यह तुम्हारी कोटि स्त्री हैं जिस स्त्री ने गीला गोइठा दिया रहा वह यह मेरी माता है और मैंने उस पाप से इसके उदर में जन्म लिया है सो यह कोटि स्त्रियों ने अग्नि के पूर्व जन्म का बदला लिया यह कह वह लड़का फिर मर गया और राजा चित्रकेतु राज्य छोड़ बन में तप करने को चले गये ॥

“कनककसिपु कर पुनि अस जाला” पृष्ठ ३५

आगे कनककसिपु अर्थात् हिरण्याक्ष की स्त्री कयाधू जब गर्भवती रही तब नारद जी ने उसको ज्ञान उपदेश दिया सो गर्भही में प्रह्लाद को ज्ञान उत्पन्न भया सोई ज्ञान से बिष्णु नरसिंह रूप धर हिरण्याक्ष का वध कर प्रह्लाद को राज तिलक किया; नारद के उपदेश से दैत्यकुल का नाश भया ॥

“कस्यप अदिति महातप कीन्हा ।

तिन्हकहंमें पूरबबर दीन्हा” पृष्ठ ८३

किसी समय कस्यप अदिति ने तपस्या कर बिष्णु से यह बर मांगा कि जब २ आप अवतार लें तब तब हम हों आप के माता पिता हों इसलिये प्रत्येक अवतार में यही माता पिता हुए यहां भी दशरथ कौसल्या में इनका अंस दिखला के पूर्व बरदान को सिद्ध किया ॥

“पूछा मुनिहिं सिला प्रभु देखी ।

सकल कथा मुनि कही विशेषी ॥ दोहा ॥

गौतम नाटि स्नाप वस उपल देख धार धीर ।

चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर” पृष्ठ ८३

किसी समय ब्रह्मा ने अपनी एक कन्या का नाम अहिल्या धरा जिसको परम मुन्दरी देख सब सुर मुनि मोहित हो इच्छा करने लगे तब ब्रह्मा बोले सब देवताओं में जो पहिले पृथ्वी की परिक्रमा करके आवें उसे यह कन्या हम देंगे सब

देवता पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने को गए और गौतम ऋषि ने पृथ्वी गौ रूप जो ब्रह्मा के स्थान में बैठी रही उस की प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा से कन्या मांग लेकर अपने घर गए तब से इन्द्र के जी में यह हुआ कि किसी प्रकार से अहिल्या के संग में भोग करें एक दिन गौतम ऋषि संध्या करने को गए तब इन्द्र गौतम ऋषि का स्वरूप धर द्वार पर पुकार अहिल्या से कहा कि हम कामातुर हैं अहिल्या ने कहा कि महाराज इस बेला में आप का ज्ञान कहाँ गया उत्तर दिया कि तू पतिव्रता है पति के वचन को मान तब वह आज्ञा भंग न कर सकी और कार्य की सिद्धि में तत्पर भई उसी समय गौतम ऋषि ने द्वार पर पुकारा यह पति का शब्द पुनः सुन चिन्ता में होय क्रोध कर इन्द्र से पूछा कि सत्य बोल कौन है तब इन्द्र ने डर कर कहा अहिल्या इन्द्र को बिलार बनाय छिपा के क्रिवाड़ा खोल दिया तब ऋषि ने पूछा कि इतनी देर काहे लगी वहाँ अहिल्या पति से मृषा वचन बोली परंतु ऋषि महाराज छल देख क्रोध कर इन्द्र को आप दिया कि तेरे सब शरीर में सहस्र भंग हो जाय और अहिल्या को आप दिया तैं सिला हो जाय । राम चन्द्र से तेरा उद्धार होगा ॥

“ गांधि सुवन सब कथा सुनाई ।

जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ” ॥ ४४ ॥

हे राम तुम्हारे कुल में एक सगर नाम राजा हुए तिन की केशी और सुमती रानी थीं परंतु पुत्र के न होने से राजा दुखी हो स्त्रियों समेत वनमें जाय तप करने लगे तहां सौ वर्ष बीतने पर भृगु मुनि के वरदान से केशी बे एक पुत्र असमंजस और सुमती के माठ हजार पुत्र हुए असमंजस केशी का पुत्र प्रति दिन अयोध्या के बालकों को नाच पर बैठाय सरजू में वीर दिया करता इसमें प्रजा बहुत दुखी हो राजा के पास गई तब राजा ने असमंजस की देश से निकाल दिया कुछ दिन के उपरांत राजा अपना चौथा पुत्र समझ के हिमगिरि पर जाय अश्वमेध यज्ञ का प्रारंभ कर दिगविजय के हेतु घोड़ा छोड़ा तहां इन्द्र उनके साथ घोड़ा चुरा कपिल मुनि के स्थान में बांध दिया तब राजा की आज्ञानुसार सुमती के माठ हजार पुत्र घोड़ा की खोज में फिरते २ कपिल मुनि के स्थान में घोड़े को बंधा देख क्रोध से पुरुष वचन बोले सो सुनके कपिल मुनि ने क्रोध पूर्वक जो देखा तो सब भस्म होगये और इधर राजा को जब इनकी सुधि न मिली तब असमंजस के पुत्र अंशुमान को खोजने के लिये भेजा तहां सुमती के भाई गरुड पतिराज से मार्ग में भेट भई तब उन्होंने सब हाल कहा यह सुन अंशुमान गरुड के संग कपिल मुनि के पास गए उनसे विनती कर घोड़ा ने आय के राजा से सब समाचार कहा इससे राजा बड़े सोच में हुए फिर यज्ञ पूर्ण कर कुछ काल राज्य करके प्रजा को सुख दिया फिर अंशुमान को राज्य भिषेक कर आप मुर धाम को गए पश्चात्

अंशुमान अत्यक्तान राज्यकर अपने पुत्र दिलीप को राज तिलक दे गंगा के निमित्त तप करने को गए तपही में शरीरांत हो गया फिर दिलीप अपने पुत्र भागीरथ को राज्य दे और सब समाचार कह बनमें जाय गंगा निमित्त तप करते शरीरांत कर दिया तब भागीरथ पिता का समाचार कुछ न पाय अपने पुत्र काकुत्स्थ को राज्य दे और समाचार कह बनमें तप करने गए तहां हजार वर्ष एक पद से टोना भुजा उठा के सूर्यके सन्मुख खड़े रहे यह देख ब्रह्मा ने प्रसन्न होय के कहा कि वर मांगो तब भागीरथ ने मांगा कि गंगा जी को टो तब ब्रह्मा बोले कि गंगा का मोर कौन सहेगा मृत्यु लोक को लिए पाताल को चली जायगी सो महादेव का आराधन करो वे संभालें तो हम दें तब भागीरथ ने महादेव का जप किया तब वे प्रसन्न हो भागीरथ का वचन अंगीकार कर अपने जटा को संवारा तब ब्रह्मा की आज्ञानुसार गंगा जी अति अभिमान युक्त चली कि महादेव के समेत रसातल को जाऊंगी परंतु एक वर्ष पर्यन्त जटा में भूल गई जटा की याह न मिली तब महादेव जीने एक बूंद जटा में से भागीरथ को दिया तपकी तीन धारा भई एक मंदाकिनी नाम स्वर्ग को गई दूसरी प्रभावती नाम पाताल को गई तीसरी मृत्यु लोक में गंगा भागीरथ के साथ हरिद्वार प्रयाग काशी होके सगर के पुत्रों को परधाम भेजती समुद्र में जाय मिली ॥

“सुसिरि सोय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत ।

चकित बिजो कति सकलदिसि जनु सिसु ष्टगी समीत” पृष्ठ १०१

एक समय जानकी जी गिरिजा पूजन के निमित्त जाती थीं तहां मार्ग में नारद मिले जानकी ने दण्डवत करके कहा कि महाराज देवी की पूजा करने को जाती हूं तब नारदने प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया कि हे जानकी इसी गिरिजावारी में श्री रामचन्द्र तुम्हारे पति तुम्ह को मिलेंगे तब जानकी ने पूछा कि महाराज हम कैसे चिन्हेंगी तब नारद बोले कि इस बगीचे में जिसको देखने से तुम्हारा मन लाभित होजाय उसी को जानना कि यही मेरे पति हैं ॥

“कहं कुंभज कहं सिंधु अपारा ।

साखेउ सुजस सकल संसारा” पृष्ठ ११२

एक समय किमी चिड़िये के तीन बच्चे को समुद्र बहाय ले गया तब वह प्रति दिन अपने चोंच से पानी भर भर कर बाहर फेका करे इस अभिमान से कि समुद्र को उलच डालें अगस्तिकृष्ण ने यह समाचार देख उससे पूछा तब पक्षी ने कारण कहा यह मुन के दया संयुक्त उससे कहा कि समुद्र जड़ निर्दंड है इसका दण्ड हम करेंगे यह कह कर चले गए किमी काल में अगस्ति जी समुद्र के तीर बैठे जप पूजा कर रहे थे कि समुद्र की तरंग इनके पास आय के पूजा की सामग्री को नष्ट कर दिया तब वह पक्षी की बात स्मरण करके तीन अंजुनी में अर्थात् राघवायनमः

केशवायनमः वासुदेवायनमः ऐसा उच्चारण कर पी गए वह बहुत काल तक सूखा पड़ा रहा फिर देवताओं ने कुम्भज ऋषि से बहुत निवेदन किया तब प्रसन्न होय लघु-शंका काके फेर भर दिया ॥

“माता पितृहिं नृदिन भए नीके।

गुरु रिन रहा सोच बड़ जीके” पृष्ठ ११६

परशुराम के पिता यमदग्नि को माता रेणुका नहाने को गई वहां जलमें मछली को क्रीड़ा करते देख के इच्छा भई कि मैं भी घर जाय पतिके संग ऐसेही क्रीड़ा करूं सो कामातुर आय के यमदग्नि में कहा कि हमें ऐसी इच्छा है यह सुन ऋषि को कोप उत्पन्न भया तब तीन बेटे जो और थे उन्हें कहा कि इस का मूड़ काट डालो उन्होंने आज्ञा न माना तब ऋषि ने तीनों लड़कों को भस्म कर दिया फिर परशुराम को बुलाय के कहा सो परशुराम ने पिता की आज्ञा सुनेतेही भट फरसे से माता का सिर काट डाला तब ऋषि प्रसन्न होय बोले कि पुत्र वर मांग तब परशुराम ने मांगा कि तीनों माइन समेत माता को जिलाय दीजिये सो ऋषि प्रसन्न होय चारों को जिलाय दिया सो यमदग्नि का मूड़ एक क्षीर सहस्राबाहु ने काट डाला इस निमित्त सारे पृथ्वी के दीन क्षत्रियों का सिर उन्होंने काटा ॥

“कद्रू विनतहिं दीन्ह दुख तुमहि कौसिला देव” पृष्ठ ११५

कश्यप मुनि की दो स्त्री तिस में सर्प की माता कद्रू सो पत्नी की माता विनता सो कद्रू ने विनता से पूछा कि सूर्य के घोड़े की पूंछ कौन रंग है विनता ने उत्तर दिया कि उज्ज्वल है कद्रू बोली नहीं श्याम रंग है इसमें दोनों ने प्रति उत्तर काके यह बात ठहराई कि हम में जो हारै सो दासी बन के रहै यह निश्चय करने के निमित्त दोनों चलीं तहां कद्रू की आज्ञानुसार मर्प जाय के घोड़े की पूंछ में लपट गए तब कद्रू ने छल से विनता को दिखला दिया कि देखो पूंछ का रंग काला है विनता लज्जित होय दासी भाव अंगीकार कर सेवा में रहने लगी ॥

“कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं।

स्वामिनि कहेउ कथा मोहि पाहीं ॥

हुइ वरदान भूप सुन थाती।

मांगइ आजु जुड़ावइ छाती” पृष्ठ ११६

एक समे दैत्यों ने लड़ाई काके इन्द्र को पराजय किया तब इन्द्र राजा दसरथ के पास आ इन्हें दैत्यों पर चढ़ा ले गए तहां कैकेई भी गई रही युद्ध में दसरथ के रथ का चक्रावलंब टूट गया यह कैकेई देख रथ पर से उतर अपनो भुजा पर चक्र का आधार कर लिया जब दसरथ महाराज ने दैत्यों को पराजय कर जय पाई

तब कैकेई बोली कि महाराज रथ से उतरिये तब ज्योंही महाराज उतरे श्री कैकेई ने हाथ को खींच लिया रथ टूट पड़ा यह समाचार देख दमरथ ने प्रसन्न होकर कहा कि आज जय तेरी सहायता में हुई दो बरदान जो तू मांग सो हम दें तब कैकेई बोली महाराज यह दोना बरदान मेरी थाती रख छोड़िए जब मुझे कार्य होगा तब मांग लूंगी ॥

“सिवि दधीचि बलि जो कछु भाषा ।

तनु धनु तजेउ बचन पन राषा” पृष्ठ १७०

राजा सिवि जब ६२ यज्ञ कर चुके और अगे फिर प्रारंभ किया तब इन्द्र भय में प्राप्त भया कि अब मेरा पद लेने में आठ यज्ञ बाकी है अपने अग्नि को कपोत बनाया और आप बाज बन उस के मारने को चला तब वह भागा हुआ राजा की सान में गया राजा ने उसका वचन सुन बाज को देख यज्ञशाला में अपनी गोदी में छिपा लिया और बाज को निवारन किया बाज बोला कि महाराज आप यहां यह क्या अर्थ करते हैं कि मेरा आहार छीन लिया मैं भूख से शरीर को छोड़ आप को प्राप्तागी करूंगा तब राजा ने कहा कि इसे तो नहीं देंगे इसके पलटे में जो मांगिगा सो देंगे पश्चात् इस प्रतिउत्तर में यह बात ठहरी कि राजा कबूतर के तुल्य तेल के अपने शरीर का मांस दे तब हम कबूतर को छोड़ देंगे इस बात पर राजा प्रसन्न होय तुला पर एक ओर कपोत को बैठाय दूसरी ओर अपने शरीर का मांस काट के चढ़ाने लगे परंतु सब शरीर का मांस काट काट के चढ़ा दिया कबूतर के समान नहीं भया तब राजा ने गले पर खड्ग चलाया त्योंही विष्णु ने हाथ पकड़ अपने लोक को भेज दिया ॥

जब वृचासुर के कष्ट में इन्द्र देवों के समेत अति दुखी होय विष्णु के पास गए तब उन्होंने ने उत्तर दिया कि राजकृषी दधीच जो नैमिषारण्य में तप काते हैं उनका हाड़ तुम लाग ले आओ तब उस हाड़ में शूस्त्र बने तब उस शूस्त्र से यह दैत्य पराजय होगा तब इन्द्र ने सब देवों के समेत दधीच कृषी के पास जाय निवेदन कर अस्थि उनसे मांगा तब कृषी ने अति प्रसन्न होय अपनी अस्थि देवों को दे शरीर को छोड़ा इन्द्र ने अस्थि ले बज बनाय के वृचासुर को पराजय किया ॥

जब राजा बलि ने अपने भुजावल से तीनो लोक का राज्य अपने आधीन कर लिया तब इन्द्र व्याकुल हो विष्णु के पास गए तब विष्णु ने इन्द्र को भरोसा देकर कहा कि तुम धीरज धीरा हम कुछ उपाय कर तुम्हारा राज्य दिलवाय देंगे ऐसा कह इन्द्र को विदाकर आप कस्यप वामन रूपधर राजा बलि के यहां भित्ति मांगने को गए तब राजा बलि से वचन बांध के साढ़े तीन पैर पृथ्वी मांगा राजा बलिने जल हाथ से ले संकल्प कर दिया तब वामन जी ने विराट रूपधर तान पैर में तीन लोक को नाप लिया अब आधा पैर जो बाकी रहा तब राजा से कहा कि महाराज आधा पैर और दीजिए तब राजा ने अपनी पीठ निहुराय दिया कि महाराज आधे

पैर में पीठ को नाप लीजिए पीठ पर पैर रख के पाताल को भेज दिया और प्रसन्न हो के कहा कि वर मांगो तब राजा बलि ने यही मांगा कि महाराज यह वामन स्वरूप आप मेरे द्वार पर खड़े रहिए ॥

“शिवि दधीच हरिचंद्र कहानी” पृष्ठ १७७

एक समय वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र से राजा हरिश्चंद्र की बड़ाई किया कि घुवांश ऐसा राजा नहीं हुआ सो विश्वामित्र ने राजा के परीचार्य तप बल से स्वप्न में राजा से राज्यभंडार सब संकल्प ले लिया और प्रातःकाल जाय के कहा कि आपने रात्रि को राज्य हमें संकल्प कर दिया परंतु उसकी दक्षिणा दीजिये और राज्य छोड़ दीजिये यह सुन राजा ने विनती किया कि महाराज मेरे पास कुछ नहीं है इससे यह क्षण रहेगी हम उद्योग करके भर देंगे ऐसा कह स्त्री और पुत्र को ले राजा राज्य छोड़ काशी को चले बाट में भी विश्वामित्र ब्राह्मण का स्वरूप धरके जो जो शरीर पोषनार्थ किसी उद्योग से इनको मिले सो भोजन की वेला आय के मांग लेवें इस तरह बड़े २ दुःख सहते राजा काशी में आए तब विश्वामित्र ने कहा कि महाराज मेरी क्षण दे दीजिए तब राजा ने स्त्री पुत्र को किसी राजा के यहां पलटे में रख के कुछ धन लेके विश्वामित्र को दिया और शेष जो रहा उसके निमित्त आप मसान के अधिकारी के यहां अपने को प्रतिनिधि किया तब उस मसानाधि कारी ने राजा हरिश्चंद्र को मसान घाट पर मुर्दों का कर लेने को नियत किया वहां रह के अपने स्वामी का काम धर्मपूर्वक किया करें फिर विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र के लड़के को तप से मार डाला तब उस मुर्दे को उसकी माता जलाने के लिए मसान घाट पर आई तब राजा ने कहा यहां जो कर नियत है सो देओगी तब फूकने पावेगी तब स्त्री रोके बोली कि महाराज मैं तुमारी भार्या हूं और यह पुत्र है दैव की विपरीतता से इस दशा को प्राप्त भई हूं अब मेरे पास एक कौड़ी नहीं है कर हम कहां से दें इस बात को सुन राजा हरिश्चंद्र ने कहा मैं धर्म का निगाहर नहीं करूंगा इस से बिना कर दिए नहीं फूकने पावेगी तब वह स्त्री लाचार होके अपने तन का वस्त्र देने के लिए उतारने लगी तब स्त्री को नग्न देख देवतों ने हांहां शब्द किया निदान तब अच्छी भांति धर्म की परीक्षा विश्वामित्र लेके प्रगट होय राजा हरिश्चंद्र की बड़ी बड़ाई किया और बंधन से निवारन कर इनको राजधानी अयोध्या में भेज दिया ॥

“हठवस सब संकट सहे गालव नरुष नरेश” पृष्ठ १८२ ॥

गालवऋषि ने जब विश्वामित्र से विद्या पढ़ के कहा कि दक्षिणा मांगी तब विश्वामित्र बोले दक्षिणा न लेगे इसमें गालव ने प्रति उत्तर करके हठ किया तब इनको हठो देख विश्वामित्र ने हाज्जार श्यामकर्ण घोड़ा मांगा यह सुन गालवऋषि घोड़े की खोज में चले ठूठते ३ तीन राजा के यहां दो २ सौ घोड़े मिले परंतु उन राजाओं ने यह कहा कि मेरे पुत्र नहीं है इससे पुत्र के पलटे में घोड़ा देंगे फिर गालवऋषि ययातिराजा के पास जाय उनसे कन्या मांगा उस कन्या को वर था

कि जो चाहे उससे पुत्र उत्पन्न करले परंतु वह कुंवारी ही बनी रहै वह कन्या ले आय तीनों राजा को पुत्र उत्पन्न कराय छः सौ घोड़े लेके शेष के लिए निरास होय विश्वामित्र के पास जाय निवेदन किया तब विश्वामित्र ने भी दो सौ घोड़े की कीमत की एक पुत्र जान के उस कन्या मे दो पुत्र उत्पन्न कर लिया और छः सौ घोड़े ले गालवक्त्रि को आशीर्वाद दे विदा किया ॥

“सुर पुरतें जनु खसेच ययाती” पृष्ठ २१६ ॥

ययाति राजा यज्ञादि धर्म का आचरण करके सदेह इन्द्र पद के लिए इन्द्रलोक को गए तब इन्द्र आगे से आय इनका सत्कार कर ले जाय के सिंहासन पर बैठाय छल के साथ बहुत बढ़ाई करके इनसे पूछा कि राजा कहो तो तुम ने कैसे धर्म किए हैं कि जिन के प्रताप से मेरे पद को प्राप्त भए तब ययाति राजा अपने पुण्य को बहुत बढ़ाई के साथ इन्द्र को सुनाने लगे और पुण्य क्षीण होने लगा जब कहते २ समस्त पुण्य क्षीण हो गया तब इन्द्र की इच्छानुसार देवतों ने ययाति राजा को स्वर्ग से मृत्युलोक में ठकेल दिया ॥

“तापस अंध स्नाप सधि आई । कौशिल्यहिं सब कथा सुनाई” पृष्ठ २१६

एक बार श्री दशरथ महाराज अहेर खेलने गए तहाँ रात्रि होने पर नदी के किनारे पर अहेर की खोज में बैठे थे यहां अवन महाराज अपने अंध माता पिता की कांवर राह में उतार कर आप उन के लिए पानी को गए ज्योंही तूँबा नदी में डुबाया तो उस में से शब्द भया उस शब्द को राजा दशरथ ने ऋगशब्द जानके तोर मारा वह वाण अवन को लगा राजा व्याकुल होय अति क्लेश के साथ अवन के पास जाय बोले तब अवन को यह भान भया कि यह राजा धर्मात्मा है तब ऐसा कहा कि हे राजा मुझे अपने शरीर का मोह नहीं परंतु मेरे माता पिता अंधे वषावत हैं सो तू जल्दी जाय के उन्हें पानी पिला ऐसा कह शरीर त्याग कर दिया तब राजा जल ले तापसअंध के पास गये पानी दिया तब उन्होंने ने पुत्र जान कुछ बात कही राजा मौन रहे तब तापसने कहा कि हे पुत्र तुम न बोलोगे तो हम पानी न पीएंगे तब राजा ने अति दीन होय अपना नाम कह सब कारण कहा तब उन्होंने ने राजा को यह स्नाप दिया कि जैसे पुत्र वियोग में मेरा शरीर छूटता है तैसे ही अंत समै मैं तुम्हें भी पुत्र वियोग का दुख प्राप्त होगा ॥

“तनय ययातहिं योवन दयेज्” पृष्ठ २२६ ॥

शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी और वृषपर्वा की पुत्री शरमिष्ठा एक समै नहाने को गई तहाँ शरमिष्ठा ने भूल से देवयानी का वस्त्र पहिर लिया तब देवयानी ने कोप कर वहाँ शरमिष्ठा से वादा विवाद किया और शुक्राचार्य जी से आय के कहा तब शुक्राचार्य ने वृषपर्वा से उराहना दिया कि तेरी पुत्री ने देवयानी से वादा विवाद किया है तब वृषपर्वा ने विनती कर निवेदन किया कि जिसमें देवयानी सन्न होय सो किया चाहिये तब शुक्राचार्य बोले कि वह चाहती है कि

शरमिष्ठा मेरी दासी होय तब वृषपर्व ने हजारदासी के समेत शरमिष्ठा को देवयानी की भृत्यापन में भेज दिया जब देवयानी ययाति राजा को व्याही गई तहां शरमिष्ठा भी देवयानी के संग आई सो कहीं एक दिन राजा को शरमिष्ठा के संग क्रीड़ा करने देख देवयानी ने कोप कर पिता से जाय के कहा तब शुक्राचार्यजी ने ययाति राजा को स्थाप दिया कि तैं बूढा हो राजा ने विनती किया कि देवयानी के संग मेरी वृद्धि नहीं भई फिर ऋषि ने दया करके कहा कि तुम अपने पुत्रों से युवा अवस्था मांग लो और अपनी बुढ़ाई उन्हें दे दो तब राजा ने देवयानी के पुत्र यदु आदि तीनों से मांगा परंतु उन्होंने ने न दिया इससे उन्हें स्थाप दिया तुम्हारा वंश राज्य का अधिकारी नहीं होगा ऐसेही शरमिष्ठा के दो पुत्रों से मांगा तिन में छोटे पुत्र पुरुने पिता की आज्ञा मान अपनी युवा अवस्था दे दिया और आशीर्वाद पाया इसी से राज्याधिकारी भए और तभी से पुत्रवंशो कहाए ॥

“वह महिमा जानहिं दुर्वासा” पृष्ठ २४४ ॥

राजा अंबरीष का ऐसा नेम था कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी में ब्राह्मण जिवाय पारन करते थे एक समे दुर्वासा ऋषि न्योता मान स्नान करने गए और द्वादशी थोड़ी रही सो वितीत काल जान के राजा ने आचमनी चण्णाशुत ले पारन किया तिस के उपरान्त दुर्वासा ऋषि आए राजा को चण्णाशुत लिए जान कोप कर स्थाप दिया सो मुन राजा कंपायमान होय पृथ्वी में गिरा और सुदरशनचक्र दुर्वासा ऋषि को चलाने को चना तब उम के भय से ऋषि भागे अब आगे ऋषि सो पीछे चक्र घूमते सब देवतों की शरण में गए परंतु किसी ने शरण नहीं दिया तब विष्णु ने आरत वचन सुन के इन से कहा कि तुम राजाही की शरण में जाओ वही तुम्हारी रक्षा करेगा तब दुर्वासा ऋषि निराश होय अंबरीष के शरण में आए तब तक राजा उसी तरह व्याकुलता में पृथ्वी में पड़ा रहा राजा इन को आने देख आगे जाय इन को आदर पूर्वक ले आए और सुदरशनचक्र को निवारन किया तब विष्णु भगवान ने अंबरीष को निर्दोषी जान दुर्वासा के स्थाप को आप अंगीकार किया और राजा ने दुर्वासा ऋषि को भोजन करवाय अत्यंत प्रीति से आदर पूर्वक विदा किया ॥

“शाशी गुरुतियगामी नृप चढे उ भूषिसुर यान ।

लोक वेदतें विमुख भा अचम न बेनुसमान” पृष्ठ ॥ २४८

चंद्रमा के गुरु वृहस्पति तिन की स्त्री तारा उम ने काम के बस मोहित होय चंद्रमा से कहा कि मेरे संग भोग करो तब चंद्रमा गुरुस्त्री का विचार कुछ मन में न लाए और उसके साथ भोग किया जब वह गर्भवती भई और पुत्र मया जिस का बुध नाम है तब वृहस्पति महाराज बुधका नाम करन करने को बैठे उस समय चंद्रमा ने जाय के कहा कि महाराज यह पुत्र मेरा है मुझ को दीजिए ऐसा कह सब समाचार गुरु जी को सुनाया तब वृहस्पति बोले कि वीर्य तुम्हारा है परंतु

तो व हमारा है इससे पुत्र का अधिकारी मैं हूँ इस में दोनों महात्मा प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतों ने इस की पंचायत कर बुध को चंद्रमा को टिला दिया ॥

राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुर में बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भए एक समै जब इंद्र वृचासुरकी हत्या के भय से भाग कर मानमरोवर कमल नाल में जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्य प्रबंध के निमित्त राजा नहुष को बुलाय इन्द्रपद दे के स्थापन किया तब राजा बड़े जय प्रताप के साथ इन्द्रपद का राज्य भोग करने लगे किसी समय इन को राज्यपद से यह नीच काँचा उत्पन्न भई कि मैं ने इन्द्रपद पाय के क्या किया जो इन्द्रानी के साथ भोग नहीं किया ऐसा विचार कर इन्द्रानी से यह संदेसा कहला भेजा तब इन्द्रानी अति घ्याकुल भई पश्चात् यह प्रतिज्ञा ठहरी कि राजा ब्राह्मणों को कहार नाय यान पर बैठ के आवैं तो हम उनके संग भोग करें यह बात सुन कामके बम हठ करके सप्तऋषियों से राजा ने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्रानी प्राप्ति होय ऐसा कह यान पर बैठा तहां पथ में ये ऋषि सत्यमार्गी धीरे २ नीचे देख पैर धरे और राजा काम के बस ऊपर से जलदी २ उच्चारण करे निदान राजा क्रोध में आय ऊपर से सर्प २ चिल्लाया तब तो सप्तऋषियों ने क्रोधित होय विमान पटक कर आप दिया कि अरे राजा काम बम तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इससे तू मृत्युलोक में जाके सर्प होय तब राजा मृत्युलोक में गिर मर्प भया ॥

राजा वेणु अपनी लड़कई से बड़ा क्रूर था और अनेक तरह के उपद्रव प्रति दिन किया करै इस से प्रजा को दुःख देखे वेणु के पिता अंग राजा को बड़ा क्रोध प्राप्ति भया पश्चात् अंगराजा के मरने पर जब यह राज्य का अधिकारी मया तब तो इसने यह आज्ञा दी कि कोई शास्त्र पुराण वेद को न मानै उसके बदले में सब कोई मेरा गुण गान करै और परमेश्वर मुझी को मानै और जो कोई मेरी आज्ञा न मानेगा सो दंड के योग्य होगा इस बात के प्रचलित होने से सुर मुनि प्रजा अति दुखी भई पश्चात् एक समै ऋषि लोगों ने आपस में विचार किया कि राजा के पास चलकर हम विषे में कुछ बात चीत करनी चाहिए ऐसा सोच के ऋषियों ने आय के राजा को बहुत ज्ञान उपदेश किया परंतु उसके चित्त में कुछ भी न आया यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानी हो तब ऋषियों ने क्रोध से स्वापा देके मारडाला पुनि ऋषियों ने राजगद्दी भ्रष्ट जान के उसके शरीर को मथा तब प्रथम जाँघ में से एक काला मनुष्य निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजा में से पृथु निकले तब इन्हें धर्म का अवतार जान के राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भए और काला मनुष्य जो प्रथम निकला था उसे कविण का राज्य दिया उसी की सन्तान निषाद कहलाई ॥

“सहस्रबाहु सुरनाथ विशंकु ।

कहि न राजमद दीन्ह कलंक” पृष्ठ २४८ ॥

महस्वबाहु क्षत्री राजा महादेव के प्रसाद करके महावनी हुआ एक समैं सेना संग लेके अहेर खेलने गया वहां दृषावन्त होय दूत को भेजा कि यहां कोई स्थान होय तो पानी मांग लावो दूत खोजता हुआ यमदग्नि के पास जाय उनसे कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले कि राजा को बुला लावो यहां भोजन कर अन्न खाकर चले जायंगे तब दूत ने राजा से जाय के कहा राजा राजमद में बोला कि इतना भोजन ऋषि कहां पावेंग कि मेना समेत मेरी दृष्टि होगी इय बात को दूतद्वारा ऋषि सुन के बोले कि हमका सोच कुछ तुमारे राजा न करैं आज मेरे अतिथि होय तब राजा मेना के साथ ऋषि के स्थान में गए और ऋषि महाराज ने काम धेनु के प्रसाद करके राजा को पहनई की तब महस्वबाहुने ऋषि से पूछा इतना समान आप ने क्षण मात्र में कैसे कर लिया तब ऋषि ने निवेदन किया कि महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजा ने कहा कि वह कामधेनु मुझ को दीजिए इस बात को सुन के ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनु को खोल ले चलो तब ऋषि ने विनती किया तब कामधेनु से भूच्छ पैदा भए उनसे और राजा से लड़ाई होने लगी फिर क्रोध में आकर सहस्वबाहु ने यमदग्नि का सिर काट डाला और रेणुका को भी घायल कर कामधेनु को ले के चला गया तब परशुराम कैलास पर समाचार सुन के आय पिता को मरा देख माँता को संतोष के निमित्त पन किया कि पृथ्वी पर क्षत्री का बीज न रखेंगे ऐसा कह सहस्वबाहु को जाय मारा ॥

फिर लक्ष्मण बोले कि रामजी देखो राजा इन्द्र राजमद करके गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या से भोगकर उसके फलसे अपनेको कलंकी बनाया यह प्रसंग पहिले कहचुके हैं ॥

राजा विशंकू को राजमद करके यह कांवा भई कि हम ऐसा यज्ञ करें कि सदेह स्वर्ग को जाय ऐसा विचार वशिष्ठ से जा कहा तब वशिष्ठ अभिमानो जान बोले कि ऐसी शास्त्र की मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति से पूछा शक्ति ने गुस्वचन का अविश्वास देख के स्वाप दिया कि तू चांडाल है पिता पुत्र में द्वेष किया चाहता है तब विशंकू चांडाली वृत्ति से वशिष्ठ की कामधेनु को मारा इस तीन पाप से तीन सींग माथे में जमे इसी से विशंकू नाम पड़ा फिर यह राजा विश्वामित्र के शरण गया उन्होंने इससे यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सब ऋषि देवता मिलके यज्ञ विध्वंस करने लगे तब विश्वामित्र ने तपबल करके ऋषि और देवता नये उत्पन्न कर यज्ञ को पूरा कर विशंकू को आज्ञा दिया कि स्वर्ग को चलाजा जब विशंकू स्वर्ग में गया तब वहां से देवता ने नीचे ठकेला इस खैंचा खैंची में वह उलटा होय अधर में लटक रह गया सो विशंकू तारा विदित है और उसी के मुंह में जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी भई जो बनारस बिहार के जिने के बीच बहती है और शास्त्र में उसका पानी छूना वर्जित है ॥ २४८

“दंडकवन पुनीत प्रभु करहू । उग्र स्वाप सुनिवर कौ हरहू” २४८ ॥

चेव हमारा है इससे पुत्र का अधिकारी मैं हूँ इस में दोनों महात्मा प्रत्युत्तर करने लगे फिर देवतों ने इस की पंचायत कर बुध को चंद्रमा को टिला दिया ॥

राजा नहुष चंद्रवंशी और राजधानी प्रतिष्ठानपुर में बड़े धर्मात्मा प्रतापी राजा भए एक समै जब इंद्र वृचासुकी हत्या के भय से भाग कर मानमगोवर कमल नाल में जाय छिपे तब इंद्रपद खाली देख बृहस्पति महाराज राज्य प्रबंध के निमित्त राजा नहुष को बुलाय इंद्रपद दे के स्थापन किया तब राजा बड़े जय प्रताप के साथ इंद्रपद का राज्य भोग करने लगे किसी समय इन को राज्यपद से यह नीच काँचा उत्पन्न भई कि मैं ने इंद्रपद पाय के क्या किया जो इन्द्रानी के साथ भोग नहीं किया ऐसा विचार कर इन्द्रानी से यह संदेसा कहला भेजा तब इन्द्रानी अति व्याकुल भई पश्चात् यह प्रतिज्ञा ठहरी कि राजा ब्राह्मणों को कहार नाय यान पर बैठ के आवैं तो हम उनके संग भोग करें यह बात सुन कामके बस हठ करके सप्रहृषियों ने राजा ने कहा कि महाराज आप थोड़ा परिश्रम करें तो हमें इन्द्रानी प्राप्त होय ऐसा कह यान पर बैठा तहां पथ में ये ऋषि सत्यमार्गी धीरे २ नीचे देख पैर धरे और राजा काम के बस ऊपर से जलदी २ उच्चारण करे निदान राजा क्रोध में आय ऊपर से सर्प २ चिल्लाया तब तो सप्रहृषियों ने क्रोधित होय विमान पटक कर आप दिया कि अरे राजा काम बस तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इससे तू मृत्युलोक में जाके सर्प होय तब राजा मृत्युलोक में गिर मर्प भया ॥

राजा वेशु अपनी लड़कई से बड़ा कर था और अनेक तरह के उपद्रव प्रति दिन किया करै इस से प्रजा को दुःख देखे वेशु के पिता अंग राजा को बड़ा क्रोध प्राप्त भया पश्चात् अंगराजा के मरने पर जब यह राज्य का अधिकारी भया तब तो इसने यह आज्ञा दी कि कोई शास्त्र पुराण वेद को न मानै उसके बदले में सब कोई मेरा गुण गान करें और परमेश्वर मुझी को मानें और जो कोई मेरी आज्ञा न मानेगा सो दंड के योग्य होगा इस बात के प्रचलित होने से मुर मुनि प्रजा अति दुखी भई पश्चात् एक समै ऋषि लोगों ने आपस में विचार किया कि राजा के पाप चलकर इस विषे में कुछ बात चीत करनी चाहिए ऐसा सोच के ऋषियों ने आय के राजा को बहुत ज्ञान उपदेश किया परंतु उसके चित्त में कुछ भी न आया यही उत्तर दिया कि तुम अज्ञानी हो तब ऋषियों ने क्रोध से स्वापा देके मारडाला पुनि ऋषियों ने राजगद्दी भ्रष्ट जान के उसके शरीर को मथा तब प्रथम जाँघ में से एक काला मनुष्य निकला उसको पाप रूप ठहराया फिर भुजा में से पृथु निकले तब इन्हें धर्म का अवतार जान के राजगद्दी दिया सो राजा पृथु बड़े धर्मात्मा नामी राजा भए और काला मनुष्य जो प्रथम निकला था उसे कनिष्ठ का राज्य दिया उसी की सन्तान निषाद कहलाइ ॥

“सहस्रबाहु सुरनाथ विशंकु ।

कहि न राजमद दीन्ह कलंकु” पृष्ठ २४८ ॥

महस्वबाहु चली राजा महादेव के प्रसाद करके महाबली हुआ एक समैं सेना संग लेके अहेर खेलने गया वहां तषावंत होय दूत को भेजा कि यहां कोई स्थान होय तो पानी मांग लावो दूत खोजता हुआ यमदग्नि के पास जाय उनमें कहा कि राजा प्यासे हैं तब ऋषि बोले कि राजा को बुला लावो यहां भोजन कर अन्न खाकर चले जायंगे तब दूत ने राजा से जाय के कहा राजा राजमद में बोला कि इतना भोजन ऋषि कहां पावेंगा कि सेना समेत मेरी तृप्ति होगी इस बात को दूत द्वाग ऋषि सुन के बोले कि हमका सोच कुछ तुमारे राजा न करें आज मेरे अतिथि होय तब राजा सेना के साथ ऋषि के स्थान में गए और ऋषि महाराज ने काम धेनु के प्रसाद करके राजा को पहनई की तब महस्वबाहुने ऋषि से पूछा इतना समान आप ने क्षण मात्र में कैसे कर लिया तब ऋषि ने निवेदन किया कि महाराज मेरे यहां कामधेनु है तब राजा ने कहा कि वह कामधेनु मुझ को दीजिए इस बात को सुन के ऋषिने बहुत उदास होय निवेदन किया परंतु राजाने नहीं माना और आज्ञा दिया कि कामधेनु को खोल ले चलो तब ऋषि ने विनती किया तब कामधेनु से भूच्छ पैदा भए उनसे और राजा से लड़ाई होने लगी फिर क्रोध में आकर सहस्वबाहु ने यमदग्नि का सिर काट डाला और रेणुका को भी घायल कर कामधेनु को ले के चला गया तब परशुराम कैलास पर समाचार सुन के आय पिता को मरा देख माता को संतोष के निमित्त पन किया कि पृथ्वी पर चवी का बीज न रखेंगे ऐसा कह सहस्वबाहु को जाय मारा ॥

फिर लक्ष्मण बोले कि रामजी देखो राजा इन्द्र राजमद करके गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या से भोगकर उसके फलमें अपनेको कलंकी बनाया यह प्रसंग पहिले कह चुके हैं ॥

राजा विशंकू को राजमद करके यह कांवा भई कि हम ऐसा यज्ञ करें कि सदेह स्वर्ग को जाय ऐसा विचार वशिष्ठ से जा कहा तब वशिष्ठ अभिमानो जान बोले कि ऐसी शास्त्र की मर्यादा नहीं फिर वशिष्ठ के पुत्र शक्ति से पूछा शक्ति ने गुरुवचन का अविश्वास देख के स्त्राप दिया कि तू चांडाल है पिता पुत्र में द्वेष किया चाहता है तब विशंकू चांडाली वृत्ति से वशिष्ठ की कामधेनु को मारा इस तीन पाप में तीन सींग माथे में जमे इसी से विशंकू नाम पड़ा फिर यह राजा विश्वामित्र के शरण गया उन्होंने इसमें यज्ञ प्रारंभ करवाया यह समाचार देख वशिष्ठादि सब ऋषि देवता मिलके यज्ञ विध्वंस करने लगे तब विश्वामित्र ने तपबल करके ऋषि और देवता नये उत्पन्न कर यज्ञ को पूरा कर विशंकू को आज्ञा दिया कि स्वर्ग को चलाजा जब विशंकू स्वर्ग में गया तब वहां से देवता ने नीचे ढकेला इस खैचा खैची में वह उलटा होय अधर में लटक रह गया सो विशंकू तारा विदित है और उसी के मुंह में जो लार टपकी सो कर्मनाशा नदी भई जो बनारस बिहार के जिने के बीच बहती है और शास्त्र में उसका पानी छूना वर्जित है ॥ २४६

“दंडकवन पुनीत प्रभु करहू । उग्र स्त्राप सुनिवर कौ हरहू” २४६ ॥

एक समै पंचवटी में दुर्भिक्ष पड़ा तब सब मुनि आहारार्थ गौतमऋषि के पास गये तब गौतम ने तपबल करके बहुत काल तक ऋषियों का पालन किया पश्चात् ऋषियों ने आपस में विचार किया कि अब जनस्थान को चलना चाहिए परंतु गौतम के भय से जा न सके तब सभी ने छल करके मायाकृत एक गऊ बनाया गौतमऋषि के हाथ में दे उसकी प्रशंसा करने लगे इस में वह हाथ में छूट मर गई तब ऋषियों ने गौतम को गोहत्या दोष लगाय दंडकारण्य को चले गए और गौतमऋषि ने जब जाना कि ऋषियों ने छल किया तब यह स्वाप दिया कि जिस वन के लोभ से तुम ने मुझ से छल किया वह भ्रष्ट हो जाय और राक्षस वास करे ॥

दूसरी कथा कि राजा दंड ने अपने गुरु पुत्री के अपसन्नता में भोग किया तब उसने अपने पिता भृगुमुनि से जाय कहा तब मुनि ने स्वाप दिया कि इस राजा का सब देश भ्रष्ट हो जाय और वहां घूरि बसे तब ऋषि लोग वहां से भाग कर जहां बसे वह जगह का नाम जनस्थान पड़ा ॥

“सेवरी देखि रामगृह आए ।

सुनि के वचन समुक्तिजियभाए” पृष्ठ ३१० ॥

सेवरी के गुरु परंधाम को जब जाने लगे तब सेवरी ने निवेदन किया कि मैं भी शरीर छोड़ परंधाम को जाऊंगी तब मुनिने कहा कि तू इस कुटी में रह तेरे यहां कुछ दिनमें राम लक्ष्मण आवेंगे तब तू उनका दर्शन करके शरीर त्याग करियो इस वचन को सुन विश्वास पूर्वक तब से प्रतिदिन उसका यह नेम था कि सबेरे कुटी लीपके वन में जाय दो दोना भर फल ले आय कुटीमें रखके बाहर बैठसांफ तक राह देखा करै जब रात होय तब निरास होय वही फल खाके सो रहै इसी तरह प्रतिदिन करते २ दस हजार वर्ष बाद राम जी पधारे तब दर्शन करके शरीर त्याग परंधाम को गई ॥

“इहांस्वापवस आवत नाहीं ।

तदपि समीत रहैं सनसाहीं” पृष्ठ ३२१ ॥

प्रवर्षन पहाड़ पर मतंगऋषि तपस्या करते थे कि बाली ने दुंदुभी दैत्य को आकाश में युद्ध करते २ पटका मो मतंगऋषी के पास गिर के मर गया और उस के रुधिर का छिंटा ऋषी के ऊपर पड़ा तब ऋषी ने क्रोध कर बाली को शाप दिया आज से फिर यहाँ आवैगा तो भस्म होजायगा ॥

“तेहि सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाव जहां रघुराई” पृष्ठ ३३०

देव अंगना नाम करके एक स्त्री ने बदरीवन में तप करके ब्रह्मा से वर मांगा कि हमें रघुनाथ जी का दर्शन होय तब ब्रह्मा ने उसे इस विवर में रहनेको कहा कि यहां रह तुम्हें बानर द्वारा श्री रामावतार की कथा सुन के राम जी का दर्शन होगा तब से वह स्त्री यहां रहती थी बानरों से समाचार सुन प्रवर्षनगिरि पर जाय श्री राम जी का दर्शन कर फिर बदरीवन निज स्थान को गई ॥

“नाथ नील नलकपि दोउ भाई।

लरिकाई कृषि आशिष पाई” पृष्ठ ३६०

नील नल अपनी बाल अवस्था में जब समुद्र के किनारे मुनि लोग सालिगराम की पूजा कर आंख मूढ़ ध्यान अवस्था में प्राप्त होय तब ये सालिगराम को उठा के पानी में फेंक दें ऐसा देख के मुनि लेगेने व्याकुल होय यह स्वाप दिया कि इस बानर का छुआ पत्थर पानी में डूबे नहीं सो स्वाप आशीर्वाद के तुल्य भया ॥

“होईहिं कीन्ह कबहुं अभिमाना ।

सो खोवै चह छपानिधाना ” ॥ पृष्ठ ४६५ ॥

एक समय कागभमुण्डि दशरथ के आंगन में बाल लोला देख रहे थे कि देखते २ इनको मोह हुआ तब राम जोके हाथ से पूरी छीन के भागे राम जीने मोह से इनकी ठिठाई देख गरुड़ का स्मरण किया सो गरुड़ और भमुण्डि दोनों में अत्यन्त युद्ध भया निदान कागभमुण्डि घायल होय भाग के तीनों लोक में फिर कहीं गरुड़ ने पीछा नहीं छोड़ा तब फिर राम जी की शरण में आए तब राम जीने गरुड़ को निवारन कर कागभमुण्डि को ज्ञान उपदेश दिया वही अभिमान गरुड़ को रहा छपानिधान ने ओता बनाय अभिमान खंडन किया ॥

। गूढार्थ ।

अवस्था—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, । इनके विभु ये हैं, जाग्रत के विश्व । स्वप्न के तैजस । सुषुप्ति के प्राज्ञ । तुरीय के ब्रह्म ।

अविद्या—जीवों की अल्पज्ञता ।

अंग—वेद के अंग छः हैं । १ शिवा २ कल्प ३ व्याकरण ४ निरुक्ति ५ छंद ६ । ज्योतिष वेद पढ़ने की विधि को शिवा कहते हैं । कल्प उसे कहते हैं जिसमें सब कर्मों के करने की रीति लिखी है । व्याकरण उसे कहते हैं जिससे शब्दों की शुद्धता का ज्ञान हो । जिसमें वेद के कठिन शब्दों का अर्थ लिखा है उसे निरुक्ति कहते हैं । जिससे अक्षर मात्रा वृत्त का ज्ञान हो उसे छंद कहते हैं ।

आश्रम—चार प्रकार के आश्रम हैं १ ब्रह्मचर्य २ गृहचर्य ३ वाणप्रस्थ ४ संन्यास ।

आकार—आकार चार हैं १ पिंडज अर्थात् जो देह के साथ उत्पन्न होते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि २ अंडज जो अंडे से होते हैं जैसे पक्षी सांप आदि ३ स्वेदज, जो पानी से उत्पन्न होते हैं जैसे चीलर ढील आदि ४ उद्भिज्ज जो पृथ्वी को फोड़ के होते हैं जैसे वृक्ष आदि ॥

आभरण—बारह हैं, नूपुर । किंकिनी । हार । चूरी । मुंदरी । कंकण । बाजूबन्द । कंठश्री । बेसर । बिरिया । टीका । शिरफूल ॥

उपवेद—सामवेद का उपवेद गांधर्ववेद अर्थात् संगीतशास्त्र । ऋग्वेद का उपवेद

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक । यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद । अथर्ववेद का उपवेद वास्तु अर्थात् शिल्पविद्या ।

ऋतु—ऋतु छः हैं १ वसंत, चैत वैशाख २ ग्रीष्म, जेठ असाढ़ । श्रावण, सावन भादों ४ शरद, कुआर कातिक ५ हेमंत, अगहन पूषद शिशिर, माघ फागुन ॥

कल्प—चारों युग को चौकड़ी कहते हैं और हजार चौकड़ी का एक कल्प होता है ।

गुण—तीन गुण हैं अर्थात् सत, रज, तम, । और राजा के चार गुण हैं अर्थात् साम, दान, दंड विभेद ।

चतुरंगिनीसेना—जिस सेना के चार अंग हैं अर्थात्, हाथी घोड़ा, रथ, पैदल ।

तत्त्व—पांच तत्त्व हैं अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश ।

चिताप—तीन प्रकार का दुःख अर्थात् आध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक ।

त्रिदेव—अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश ।

त्रिविध कर्म—संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण ।

दिक्पाल—अर्थात् दिशाओं के रक्षक, पूर्वदिशा के इन्द्र । आग्नेय के अग्नि, दक्षिण के यम । नैऋत के निऋत । पश्चिम के वरुण । वायव्य के वायु । उत्तर के कुबेर । ईशान के ईशान ।

पुगाण—पुराण उसे कहते हैं जिस में इन पांचों का वर्णन हो अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, मन्वन्तर, वंश चरित ।

भक्त—चार प्रकार के भक्त हैं अर्थात् आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, विज्ञाननिवास ।

भक्ति—नव प्रकार की भक्ति है अर्थात् अर्पण, कीर्त्तन, स्मरण, चरणसेवा, अर्चन, वन्दन, दासता, सख्य ।

युग—चार युग हैं अर्थात्, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ।

योनि—चौरासी लाख योनि हैं, नव लाख जलचर, सत्ताईस लाख स्थावर, ग्यारह लाख कृमि, दस लाख पक्षी, चौपाये तेईस लाख, मनुष्य चार लाख ।

राम—राम तीन हैं अर्थात् परशुगम, बलराम, श्री रामचन्द्र ।

विद्या—ईश्वर की सर्वज्ञता को विद्या कहते हैं ।

शास्त्र—छः शास्त्र हैं अर्थात् वेदांत, सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, शृंगार—सोलह प्रकार का सिंगार है, अंगशुचि, मञ्जन, अमलवसन, पहिरन, जात्रक, केश संवारना, मांग में सेंदूर लगाना, भाल में खोरी अर्थात् तिलक, चित्रक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, अंगजा अंग में लगाना, भूषण पुष्प, सुगंधलगाना मुखराग, दांत रंगना, अधरराग, कांजरलगाना ।

सप्तऋषि—सात ऋषि अर्थात् कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, गौतम, यमदग्नि ।

समीर—तीन प्रकार की वायु अर्थात्, शीतल, मंद, सुगंध ।

सिद्धि—आठ सिद्धि हैं अर्थात् अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व ।

